मूल्य रु।. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन विनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख सलंग अंक ११२ अगस्त-२०१६

गुरुपूर्णिमा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

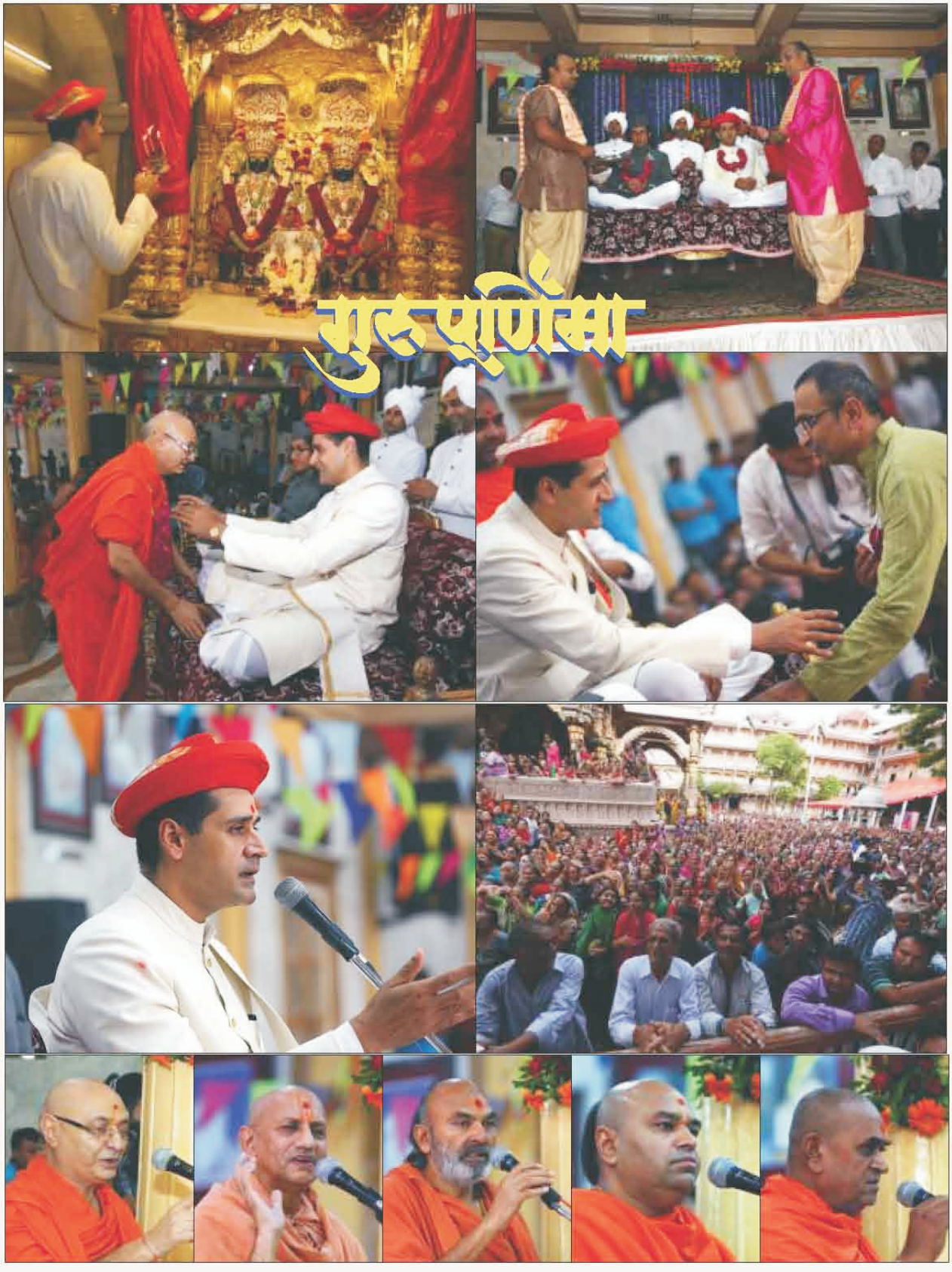
गुरु पूर्णिमा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११२

अगस्त-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	पिबैक का पूर्वइतिहास	०६
०४.	अथ रुचिराष्टकम्	०९
०५.	हिमालय की गोद में पुण्य भूमि ऋषिकेश के आंगन में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	२०
०८.	भक्ति सुधा	२२
०९.	सत्संग समाचार	२५

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

''अमारो तो एवो स्वभाव छे जे, एक तो भगवानने बीजा भगवानना भक्त ने, त्रीजा ब्राह्मणने, चौथो कोईक गरीब मनुष्य, ए चारथी अमे अतिसे बीए छीए जे, रखे एमनो द्रोह थई जाय नहीं. अने एवा तो बीजा कोई थी अमे बीता नथी। केम जे, ए चार विना बीजा नो कोईक द्रोह करे तो तेना देहनो नाश थाय पण जीव नाश पामे नहि। अने ए चारमांथी एकनो जो द्रोह करे तो तेनो जीव पण नाश पामी जाय छे।(व.व.-११)

इसलिये हमें अपने इष्टदेव की आज्ञा का अवश्य पालन करना चाहिए। भगवान श्रीहरि की प्रत्येक आज्ञा हम सभी के सुख के लिये है। इसलिये महाराज की प्रत्येक आज्ञा का पालन करेंगे तो अवश्य सुखी रहेंगे। चातुर्मास चल रहा है। अपने प्रत्येक मंदिर में हरिभक्त साथ में मिलकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की विशेष धुनि कीजियेगा। जिससे अपने गुजरात में सर्वोपरी श्रीहरि खूब बरसात करावे, तथा प्रत्येक भक्त पर्यावरण की रक्षा के लिये एक वर्ष तक एक एक वृक्ष का रोपण करे और उसका रक्षण भी करे। इसमें अनेक माला का फल श्रीजी महाराज देंगे। पर्यावरण का रक्षण करना यह हमारी पवित्र तथा नैतिक फर्ज है।

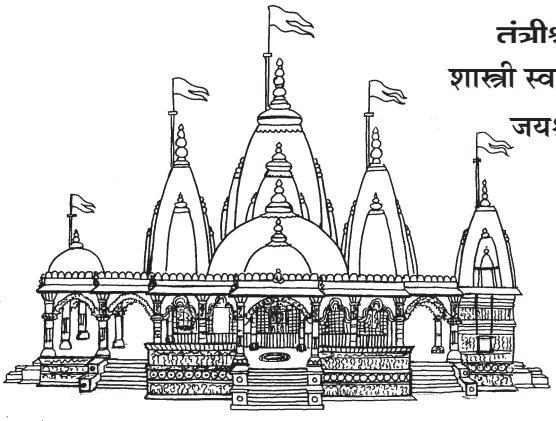

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१६)

१ से ५	श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड (अमेरिका) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
९	श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१०	पालडी तथा बोपल में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।
१३ से १८	श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा अमेरिका (ज्योर्जिया) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१९	गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर अमदावाद कालुपुर मंदिर में संत हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन संपन्न।
२१	कडी गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात पूजन प्रसंग पर पदार्पण।
२३ से १ अगस्त	- शिकागो (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

प.पू. लालजी महाराजश्री के १९ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर कालुपुर मंदिर में ता. २९-७-१६ आदरणीय संत तथा गांव गाँव से पधारे हुये प्रिय भक्तजन। सर्व प्रथम आज के इस प्रसंग पर आप सभी लोग हमें शुभेच्छा प्रदान किये उसके बदले में खूब-खूब धन्यवाद। हमारा व्यक्तिगत नहीं अपितु इस स्थान की महिमा होने से हम सभी एक साथ मिलते हैं और उत्सव करते हैं। इसी तरह हम सभी एक साथ मिलकर श्री नरनारायणदेव की छत्रछायामें रहकर खूब पुरुषार्थ करें जिससे सत्संग का विस्तार हो। प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. महाराजश्री द्वारा अनेक मंदिरो का निर्माण हुआ। महत्व की बात तो यह है कि उनके द्वारा असंख्य भक्तों के हृदय में मंदिर बने है, जो भक्त जहाँ रहते हैं वहाँ पर मंदिर के विना भी मंदिर जैसा वातावरण हो जाता है। इसलिये इसी मार्ग पर हम सभी को भी पुरुषार्थ करना चाहिए। इसके लिये विशेष रुप से अपने मंदिर द्वारा दीपावली के बाद ता. ६-११-१६ को बालकों का एक शिबिर तथा दूसरा शिबिर डांगरवा गाँव में आयोजित किया गया है। इसलिये इन दोनो शिबिरों में आप लोग अपने बेटा-बेटी को अवस्य भेजिंयेगा। इससे उनके मन में श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा दृढ हो तथा संत-हरिभक्तों के प्रति आदरभाव, आत्मीयता तथा स्नेह बढे तथा संस्कार का सिंचन हो। अन्यथा आज के समय में बालक तथा युवान किस रास्ते पर चले जायेंगे पता नहीं है। आज का दिन हमारे लिये आशीर्वाद प्राप्त करने का दिन है आप सभी के आशीर्वाद के साथ हम सत्संग का कार्य कर सकें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

पिबैक का पूर्व इतिहास

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

पिबैक का नाम माणेक्य जोषी था । उसके जन्मस्थान बांसवाडा में घंटाघर के सामने भवानी शंकर जोषी का ''जोषी लाज'' चलता है । उनके पूर्वज विसनगर से व्यापार के लिये तेलंगाना चले गये थे । वहाँ वे लोग शर्मा अवटंक सेजाने जाते ते । माणेक्य जोषी युवा अवस्था में ही भगवान की खोज के लिये पूरी भारत की यात्रा किये थे । उस समय आसाम के माणेकपुर (वर्तमान में भलामयांग) गाँव के नागरवाडा में महाकाली के मंदिर की मुलाकात हो गई । उस नागर पुजारी का नाम प्रभाशंकर शर्मा था । वह अपनी पुत्रि शिव कुंवर का विवाह माणेक्य जोषी के साथ कर दिया । उन्हें अपने घर में ही घर जमाई के रुप में रखलिया । उन्होंने अपनी संपूर्ण मिलकत उनके नाम कर दिया । अपने पास रखकर तांत्रिक विद्या सिखाई । सिखाने के बाद वे धाम विद्या में पारंगत हो गये । इस तरह स्त्री-धन तथा सत्ता मिलते ही माणेक्य जोषी का ध्येय बदल गया । भगवान को प्राप्त करने निकला था और भोग में फंस गया । इसके बाद मंत्रोर के प्रभाव से सभी को अपने अनुकूल करने लगा । बाद में वह वहीं रुक गया । उस नागर ब्राह्मण माणेक्य को शिवकुंवर से एक पुत्री का जन्म हुआ । उसका नाम मायाकुंवर रखा । उस पुत्री के जन्म के बाद थोडे समय में ही शिवकुंवर माता का निधन हो गया । पिताने उसका लालन पालन करके बड़ा किया । इसके बाद बड़ी होकर माया कुंवर अपने पिता को भोजनादिक बनाकर खिलाती ।

वह इतना अधिक मदिरा पान करता कि वहाँ के लोग-(मलेक-नागा तथा झेटिया जो आदिवासी लोग: उसे पिबैक कहकर बुलाते थे । वह अपनी पुत्री के नाम के ऊपर से बुराम पांग-भलामयांग इस तरह दो गाँव को वसाया था । उसमें भलामयांग गाँव में मात्र आश्रम तथा बगीचा था । जो विद्यार्थी तांत्रिक विद्या सीखने आता उसके लिये झोपडी बनवाया था । उसकी बेटी मायाभी शुद्ध तथा सात्विक तंत्र विद्या में पारंगत थी । वह भी लोगो को विद्या सिखाती थी । पिबैक बुरामयांग गाँव में रहता था । बगल के जम्मुरा गाँव में विशेष आदिवासी लोग रहते थे । उन आदिवासियों का स्वामी पिबैक था । वे सभी आदिवासी उसी के शिष्य थे । ये गाँव आसाम राज्य के अमीनगाँव स्टेशन से ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर्वतीय प्रांत में आया हुआ है । गोहाटी से भी यहां जाया जा सकता है । उसी के समीप में नीलांचल पर्वत के ऊपर काली, तारा, भुवनेश्वरी, भैरवी छिन्नमस्ता, बगला मुखी, धूमावती, मातंगी, शारदा तथा लक्ष्मीजी के साथ कामक्षीदेवी का प्रसिद्ध मंदिर था । कुच विहार के यहोवाह वंश के राजा विश्वसिंह तथा शिवसिंहने इसी स्थानपर कामाक्षी देवी का मंदिर बनवाया है । देवी भागवत में समग्र भूमंडल में देवी का यह महाक्षेत्र या तीर्थ कहा जाता है । इसका बहुत बड़ा महत्व बताया गया है ।

आसाम के कामरुदेश के नागा, खासी तथा झेटिया पर्वत की तलहटी में यह तीर्थ तथा गाँव आया हुआ है । यहीं पर पिबैक रहता था । सभी को वाम विद्या सिखाता था । उसकी पुत्री माया भलामयांग गाँव में रहकर शुद्ध तथा सात्विक तांत्रिक विद्या सिखाती थी । उस जमाने में समग्र भारत वर्ष में पिबैक तांत्रिक विद्या में खूब प्रसिद्ध था । वह उमानंदो भैरव का पुजारी था ।

यह उमानंदो शिवलिंग ब्रह्मपुत्रा नदी के बीच टापू में आया हुआ है। यहाँ पर ब्रह्मपुत्रा नदी तीन किलो मीटर चौडी बहती है।

सं. १८५३ कार्तिक शुक्ल-पूर्णिमा ता. १५-११-१७९६ मंगलवार को वर्णिराज श्रीहरि वनविचरण करते हुये भलामयांग गाँव पहुंचे। इस गाँव से थोडी दूर पर पश्चिम में नीलांचल पर्वत के ऊपर कामाक्षी देवी का भव्य मंदिर था। श्रीहरि उसी गाँव के बगीचे में रुके। हमारी बाग में सिद्धलोगी आये हुये हैं इसकी खबर मिलते ही पिबैक अपने शिष्यो के साथ पहुंच गया। वहाँ कहने लगा कि यदि जीवन की आशा हो तो हमारे शिष्य हो जाओ। यह सुनकर वर्णिराजने कहा कि हम तुम्हारे शिष्यत्व को स्वीकार नही करते। बाद में वह वर्णीराज के ऊपर नाना प्रकार के तंत्र मंत्र का प्रयोग किया। सभी निष्फल गया।

इसके बाद उसने वर्णिराज को उमानंदो के स्थान पर आने के लिये कहा। वर्णीराज उसे स्वीकार कर लिये। ब्रह्मपुत्रा नदी के बीच में यह मंदिर था। सभी लोग वहाँ गये। वहाँ जाकर पिबैकने भैरव मंदिर के पास एक वृक्ष के ऊपर अभिमंत्रित चावल का प्रयोग किया। तत्काल वह वृक्ष सूख गया। बाद में अट्टहास करते हुये कहा कि ''बेटे ! इतना समय लगेगा। इसके बाद वर्णिराजने कहा कि वृक्ष को सुखाने में महानता नहीं है, वृक्ष को हराभरा करने में महानता है। यह कार्य - पिबैक से संभनव नहीं था। वर्णिराजने अपनी दृष्टि मात्र से वृक्ष को हरा भरा कर दिया। फिर भी पिबैक का अहंकार गया नहीं। अंत में उसने वर्णिराज को मारने के लिये उमानंदो (वीर भैरव) को भेंजा। वह भी वापस आकर पिबैक को खूब मारा तथा कहने लाग कि ''तूं जिसे मारने की वात करता है वह तो स्वंय परमेश्वर है, यदि तुझे सुखी होना हो तो उनकी शरण में चला जा। इस तरह वह वापस आया। उसी समय उमानंदो शिवलिंग में दरार पड़ गई और बड़ी आवाज हुई। यह सबकुछ देखर वर्णिराज की शरण में आया। सत्संगिजीवन-१ अध्याय-४७ में लिखा है कि पिबैक बाद में साक्षात् ईश्वर मानने लगा। इसके बाद में श्रीहरि का आश्रित हो गया। कौलागमादि वाममार्गी ग्रंथो का त्यागकर श्रीमद् भागवत तथा गीताजी का पाठ करने लगा और श्रीहरि का निरंतर भजन करने लगा।

''तेनु नाम प्रसिद्ध पिबैक, जेणे जीतेला सिद्ध अनेक।
तेने श्रीहरिये जीती लीधो, पछी शिष्य पोतातणो कीधो ॥

इस तरह स्वामिनारायण भगवानने वनविचरण के समय तांत्रिक पिबैक को अपना शिष्य बनाया और बाद में वर्णिराज ने उनावा के जीवारावल, मनहर बारोट, करसन पटेल इन तीन मुक्तो को पहचान कर परिचय देकर कहे कि पवित्र कुल में पैदा हुये आपलोग इस पिबैक का साथ छोडकर घर जाइये। हम आप सभी से मिलने अवश्य आयेंगे। इस तरह पिबैक का पराजय देखकर तथा प्रभु का प्रताप देखकर वे तीन प्रभु की शरण हो गये।

उस समय प्रति वर्ष माताजी की मूर्ति के समक्ष बकरा की बलि दी जाती थी। इसके अलांवा प्रत्येक नवरात्रि की अंतिम तिथि को तो अनेक पशुओं की बलि दी जाती थी। श्रीहरिने अपने प्रताप से वह सब बंद करा दिया। सभी से कहे कि' आप लोग अपने घर में मिट्टी की माताजी की मूर्ति बनाकर उसी को नारियल का बोग लगाइयेगा इससे आपलोगों का सभी मनोरथ पूरा होगा। बाद में उस मूर्ति को यहाँ आश्रममें रखजाना। इसलिये श्रीहरिने वहाँ का श्री कामाक्षीदेवी का मंदिर तथा विष्णु का मंदिर लोगों से बनवाया था। इस तरह वहाँ पर धर्म की स्थापना करके श्रीहरि वहाँ से आगे चले। श्रीहरि के

कथनानुसार पिबैक की बेटी माया ने भी सभी को समझाया कि बकरा, कबूतर, मुर्गा इत्यादि की बलि नहीं चढाना चाहिये । इसके स्थान पर नारियल को चढाना चाहिये । उस प्रांत में उस समय उसका खूब प्रभाव था । बहुत लोग उसके वचन से सुखी हुये । उसकी लोगों में खूब चाहना थी, ऐसा वहाँ के लोग कहते है इस मंदिर के बगल में एक नारियल वाले की दुकान है । एक ९० वर्ष के वृद्धने कहा कि २०० वर्ष पूर्व यहाँ पर बकरा, कबूतर, मुर्गा की ही बलि दी जाती थी । परंतु उत्तर भारत का एक बालयोगी आये थे, उन्होंने पिबैक को पराजित करके यहाँ के लोगो को नारिय को चढाने की बात की थी , और आज वह प्रथा यहाँ चालू है । नीलकंठ वर्णी यहाँ पर १०-१२ दिनतक रहे । उन्हीं के प्रभाव से यहाँ के लोग अहिंसा धर्म का पालन करते हैं । मांसाहार भी नहीं करते । इस वात को उनावा के अशोक भाई एडवोक वहाँ जाकर देखा तो श्रीहरिने जिस वृक्ष को हरा किया था वह आज भी जर्जित हालत में है कुछ डालें आज भी हरी है । उमानंदो का आवाज के साथ फटा हुआ शिवलिंग आज भी वहाँ विद्यमान है । उस समय श्रीहरि जैसा कहे थे उसके अनुसार लोग हजारो की संख्या में माटी की माताजी की मूर्ति बनाकर उसके सामने श्रीफळ (नारियल) को चढाते हैं । इसके बाद उस मूर्ति को कालिका आश्रम के पास स्कूल के मैदान में रख जाते हैं । वह बरसात के पानी से पिधल जाती थी, जिससे काफी प्रदूषण होता था । अब वहाँ की सरकार सभी को अपने ढंग से विसर्जन करने का आदेश कर दिया है वहाँ के आदिवासी लोग कहीं भी मूर्ति को विसर्जित कर देते थे इससे और अधिक प्रदूषण हो गया, जिस से रोग की मात्रा बढ गई . इसलिये इस समय वहाँ की सरकार ब्रह्मपुत्रा नदी के किनारे ऐसा एकघाट बनाया है जहाँ सभी मूर्तियां का व्यवस्थित विसर्जन होता है । जहाँ माया कुंवर रहती थी वहीं पर वर्तमान में आश्रम दिया गया है ।

इसके बाद श्रीहरि के कहने से उनावा गुजरात से आये हुये तीनो जन मायाकुंवर से अनुज्ञा प्राप्त किये तब मायाकुंवर ने कहा कि, जीवा रावल ? आप को मैने भाई माना है आपसे एकवात कहनी है कि "जो यहाँ आये थे वे योगी थे ईश्वर के अंश थे, यदि वे आप से मिलें तो मेरा समचार उन्हें दीजिएगा कि मैं उनकी पूजा करना चाहती हूं । मेरे पिताजी भले सत्य का मार्ग भूल गये थे । ईश्वर कृपा से उन्हें अब सत्य का पता चला । बाद में रामानंद स्वामी की चरण रज जीवा रावलने उन्हें दी इससे माया को परम शांति का अनुभव हुआ । बाद में जाते समय जीवा रावलने कहा कि, हे बहन ? कभी आप को दुःख आये तो गुजरात आजाइयेगा । वह योगी जाते समय यह वरदान देते गये हैं कि, मैं आपके गाँव आऊँगा । इस के बाद माया से आज्ञा लेकर जीवा रावल, मनहर बारोट, करसन पटेल तीनो उनावा के लिये निकल पडे ।

उमर होने से अपने धर्म भाई तथा नीलकंठ वर्णी को याद आयी . भाई भी जाते समय कहे थे कि योगी गुजरात अवश्य पधारेंगे । उनकी भी मुलाकात हो जाएगी । ऐसा विचार आने से, गुजरात में आने के लिये दृढ निश्चय कर लिया ।अपने पद प्रतिष्ठा तथा संपत्ति का त्याग करके कुछ आदमी को साथ लेकर गुजरात आई । खोजते-खोजते उनावां गाँव पहुंची । करसन पटेलने रणीयात बाको उनावा गाँव में आई हुई बिबैक की पुत्री मायाकुंवर की पहचान कराई, बाद में बा ने उन्हें अपने पास रखा । बा उन्हें शुद्ध भौजन कराती थी । बा स्वामिनारायण भगवान की महिमा सुनाती । तब माया कहती, मुझे उनहीं भगवान के दर्शन की लालसा है । बाद में रणीयात बा ने स्वामिनारायण भगवान का एकबार दर्शन करवाया । पहले उन्हें स्वामिनारायण भगवान ने बालयोगी के रूप दर्शन दिया । इससे उन्हें यह विश्वास हो गया कि ए ईश्वर के ही अवतार है ।

रणीयात बाने श्रीहरि की विशेष सेवा हो इस हेतु से माया को अपनी बड़ी बहन गंगाबा को जेतलपुर में सोंप दिया । गंगाबा का योग होने से माया की संसार से अतिशय विरक्ति तथा प्रगट प्रभु में पूर्ण भक्ति प्रगट हो गई । गंगाबा के साथ सत्संग में विचरण करती थी । एकबार श्रीहरिने सभा में पिबैक के पराजय की बात करके पुत्री माया की पहचान कराई थी । श्रीहरि के स्वधाम पधारने के बाद आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की धर्मपत्नी (गादीवालाजी) सुनंदादेवीजी की सेवा में मायाने अपना अन्तिम समय श्रीहरि की भक्ति में व्यतीत किया ।

॥ अथ रुचिराष्टकम ॥

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदास (अमदावाद)

परमाद्भुत दिव्य वपुः रुचिर रुचिर्देधितलंगुलयो रुचिराः
नरवमंडल मिंदुनिभंसालोट रुचिरा दिपने रविलंसनिरम् ॥१॥

नित्यानंद स्वामी अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप का वर्णन करते हुये कहते हैं कि - दर्शन करने वाले को मन-हृदय में अत्यन्त रुचि को उत्पन्न करने वाले है । जहाँ किसी की कल्पना भी नहीं पहुंच सके उससे भी परे एसा अद्‌भुत जिसका वपु है जो दर्शन करते ही अन्तःकरण में वश जाता है । अर्थात् रुचिकर है । एक एक अवयव की वात करते हुये लिखते हैं कि उस परमात्मा के दोनो चरण तल में सोलह प्रकार के चिन्ह मेरे हृदय में अतिरुचि को उत्पन्न करने वाले हैं । इसी तरह दोनो चरण की अंगुलियो के नख की वर्तुलाकार मंडल जैसे चन्द्र मां की तेजस्विता शांति, शीतलता प्रदान करती है वैसी चित्त में रुचिकर लगती है । रुचि जीवन के अन्तःकरण में उत्पन्न होती है तथा अन्तःकरण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्तःकरण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करने वाला है ।

प्रपदे रुचिरे प्रसूते रुचिरे मृदुजानु पुत्रं रुचिरं रुचिरम् ।
करिहस्त निभो रुयुगं रुचिरं रुचिरा धिपते रविलंरुचिरम् ॥२॥

उस परमात्मा श्रीरि के दिव्य स्वरुप में चरणारविंद का गमन अतिरुचिकर है । अतिकमल दोनो गुल्फ (घुटने) हृदय को रुचि पैदा करने वाले है । हाथी के सूडं जैसा जिन के दोनो जंधे है. ए सभी रुचि पैदा करने वाले हैं । रुचि जीवन के अन्तःकरण में उत्पन्न होती है तथा अन्तःकरण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्तःकरण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

कटिपुष्ट नितंबयुगं रुचिरं नतनाभिकजं जठरं रुचिरम् ।
मृदुलौ स्तननीलमणी रुचिरो रुचिरा धिपते रविलंरुचिरम् ॥३॥

श्रीहरि की कटि (कमर): तथा नितंब (पृष्ठभाग) दोनो पुष्ट है और रुचिकर हैं । गंभीप कमलाकर नाभी तथा कोमल पेट चित्तमें रुचि जांय ऐसे हैं । मृदुल अर्थात् कोमल नीलमणी के समान चमकेत हुये दोनो स्तन अत्यन्त रुचिकर है । रुचि जीवन के अन्तःकरण में उत्पन्न होती है तथा अन्तःकरण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्तःकरण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

हृदयं रुचिरं पृथुतुंगमुरः स्थल हंसयुगं रुचिरं रुचिरौ ।
करभौ करकंज तले रुचिरे रुचिरा धिपते रविलंरुचिरम् ॥४॥

श्रीहरि महाराज का हृदय बहुत रुचिर है तथा उठी हुई विशाल वक्षः स्तळ की दोनो हंसुलियां अतिशय रुचिकर हैं । दोनो करकमल के करभ तथा दोनो हाथ के कमल जैसी हथेलिया अत्यन्त रुचिप्रद है । रुचि जीव के अन्तःकरण में उत्पन्न होती है तथा अन्तःकरण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्तःकरण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

भुजदंडयुगं रुचिरं चितुकं विद्युमोदकरं वदनं रुचिरम् ।
रसना रुचिरा दशना रुचिरा रुचिरा धिपते रविलंरुचिरम् ॥५॥

श्रीजी महाराज का दोनो भुज दंड अन्तःकरण में रुचिर उत्पन्न करने वाला है तथा उनकी दाढी तथा पूर्णिमा के चन्द्र मा के समान आनंद देने वाला मुखारविंद देखने वाले को रुचि बढाने वाला है उस हरि की रसना (जिहवा) दाडम के समान दांतो का हार अत्यंत रुचिकर दिखाई देता है । रुचि जीव के अन्तःकरण में उत्पन्न होती है तथा अन्तःकरण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्तःकरण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

जलजोपकंठ शिरो रुचिरं तिलपुष्प निभा सुनसा रुचिरा ।
अधरौ रुचिरा बान्कं रुचिरं रुचिरा धिपते रविलंरुचिरम् ॥६॥

महाराज का कंठ - सागर से उत्पन्न शंख के आकार जैसा तथा सुंदर मस्तक मन के अनकूल रुचिर है । तिलके पृक्ष के पुष्प जैसी दिखाई देने वाली नासिका (नाक) भी श्रेष्ठ है रुचिकरने वाली है । दोनो सुंदर ओष्ठ तथा पतली मोछकी बनावट खूब रुचिप्रद है । रुचि जीव के अन्तःकरण में उत्पन्न होती है तथा अन्तःकरण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्तःकरण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

अरुणे चपले नयने रुचिरंमरचायनि भेट मुनि शांति करे ।
भृकुटी रुचिरे श्रवणौ रुचिरौ रुचिरा धिपते रविलंरुचिरम् ॥७॥

श्रीहरि का चंचलन नेत्र - प्रातःकाल खिले हुये कमल के समान रुचि करने वाला है । कामदेव के बाण की तरह

दिखाई देने वाली मुस्कान मुनियों को शान्तिप्रदान करने वाली है । हृदय में शांति प्रदान करनेवाली भृकुटी अत्यन्त रुचिकर है । इसी तरह दोनो कान रुचि उत्पन्न करनेवाले है । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

हरिचंदन चर्चित म्त्गलमलं तिलकं रुचिरं कुसुमाभारणम् ।
बहुशस्तिलका रुचिराश्चि कुरा रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥८॥

श्रीजी महाराज का चन्दन चर्चित अंग तथा कपाल में चन्दन चर्चित स्वच्छ तिलक रुचिकर है । तथा पुष्पो से सजा हुआ आभूषण रुचिकर है । श्रीजी महाराज के शरीर में बहुतसारे तिल भी रुचिकर है । इसी तरह अनेक चिन्ह भी रुचिकर है । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

सित सूक्ष्मधनं वसनं रुचिरं मुनिरंजनकं वचनं रुचिरम् ।
अवलोकनमा भरणं रुचिरं रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥९॥

श्रीजी महाराज द्वारा धारित सूक्ष्म तथा सान्द्र सफेद वस्त्र हृदय को रुचिकर है । मुनियों को आनंद देनेवाला महाराज का उपदेशात्मक वचन भी रुचिप्रद है । महाराज का भक्तों के सामने देखना रुचिकर लगता है । सुवर्ण के अलंकार भी रुचि उत्पन्न करने वाले हैं । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

स्नपनं रुचिरं तरणं रुचिरं भरणं रुचिरं शरण रुचिरम् ।
रमणं रुचिरं क्षवणं रुचिरं रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥१०॥

श्रीजी महाराज का स्नान भी रुचिकर है, तैरनाभी रुचिकर है, स्नान करने के लिये लोटा में पानी भरे वह भी रुचिकर है । महाराज का शरण स्वीकारना वह भी रुचिकर है । महाराज संत-भक्तों के साथ क्रीडा करते है वह भी रुचिप्रद है । महाराज की वाणी का श्रवण करना भी रुचिप्रद है । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

कथनं रुचिरं स्मरणं रुचिरं मननं रुचिरं स्तवनं रुचिरम् ।
विनयो रुचिरो घरने रुचिरं रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥११॥

श्रीजी महाराजजी जो भी कहते है वह रुचिर है । उनका स्मरण करना भी रुचिकर है । महाराज की मूर्ति का मनन करना भी रुचिकर है । महाराज की स्तुति करना, प्रार्थना करना, अष्टक या कीर्तन बोलना वह भी रुचि उत्पनन करने वाली है । महाराज का विनयपूर्वक सभी व्यवहार रुचिकर है । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

अशनं रुचिरं मुखवा सइहाचमनं रुचिरं नमनं रुचिरम् ।
जलपान पदो रुचिरं शयनं रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥१२॥

श्रीजी महाराज का भोजन ग्रहण करना भी रुचिकर है । भोजन के बाद मुखवास, आचमन अतिरुचिप्रद है । महाराज देवों की मूर्ति के सन्मुख नमस्कार करते हैं वह भी अतिरुचिर है । दिन में जब भी पानी पीते है वह भी रुचिकर है । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

गमनं रुचिरं दमनं रुचिरं शमनं रुचिरं जपनं रुचिरम् ।
तपनं रुचिरं यजनं रुचिरं रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥१३॥

श्रीजी महाराज बड़े-बड़े यज्ञ में हवन करेत हैं वह भी रुचिकर है । हठयोग के प्रथम अंग के समान यमन करते हैं । वह भी रुचिकर है । ताली बजाकर भजन करते हैं वह भी रुचिकर है । महाराज का त्याग भी रुचिकर है । महाराज का धाम जो अक्षरधाम है वह भी रुचिकर है । महाराज का निवास स्थान जो रंग महल तथा अक्षर ओरडी स्थान वह भी रुचिकर है । रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

प्रपदे रुचिरे प्रसूते रुचिरे मृदुजानु पुत्रं रुचिरं रुचिरम् ।
करिहस्त निभो रुयुगं रुचिरं रुचिरा धिपते रस्विलंरुचिरम् ॥१०॥

रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है ।

हवन रुचिरे यमनं रुचिरं भजनं रुचिरं त्यजनं राचिरमु ।
भवनं रुचिरं सदनं रुचिरं रुचिरा धिपते रखिलंरुचिरम् ॥१५॥

श्रीजी महाराज बड़े-बड़े यज्ञ में हवन करते हैं वह भी रुचिर है। इथयोग का प्रथम अंग समानयमन करते है वह भी रुचिर है। ताली बजाकर भझन करना भी रुचिर है, महाराज का त्याग की रुचिर है। महाराज का अक्षरधाम भी रुचिर है। महाराज का निवास स्थान रंगमहलभी रुचिर है। रुचिजीव के अन्त:करण में होती है अन्त:करण के अधिपति अन्तर्यामी परब्रह्म परमात्मा उसके नियंता है इसलिये जीव के रुचि के अधिपति ऐसे परमेश्वर सबकुथ रुचिर होता है । अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करनेवाला है।

जननी रुचिरा जनको रुचिरं स्वजना रुचिरा मुनयो रुचिरा ।
वटवो रुचिरा पदगा रुचिरा रुचिरा धिपते रखिलंरुचिरम् ॥१५॥

श्रीजी महाराज को जन्म देने वाली माता-पिता रुचिकर है। महाराज के कुटुम्बीजन रुचिर है। महाराज के दिक्षीत परमहंस मुनि रुचिर है। महाराजे क पार्षद रुचिर है। रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है, तथा अन्त:करण के अधिपति अन्तर्यामी परब्रहम परमात्मा उसके नियंता है, इस लिये जीव के रुचि के अधिकपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिर होता है, अर्थात्, जीव मात्रका कल्याण करने वाला है।

अवनं रुचिर रुचिर चरनं हरणं रुचिरं रुचिरं करणम् ।
पठनं रुचिरं रुचिरं रटनं रुचिरा धिपते रखिलंरुचिरम् ॥१६॥

श्रीजी महारा जका देशान्तर से आनारुचिकर है । महाराज ने संप्रदाय की रचना करके शिक्षापत्री की रचना की वह भी रुचिकर है। महाराज अपने भक्तों के कष्ट को दूर करते हैं वह भी रूचिर है। महाराज के सभी कार्य रुचिर है। महाराज वांचते है, पढते हैं वह भी रुचिर है। महाराज मंत्र या श्लोक का रटन करते हैं वह भी रुचिर है। रुचि जीव के अन्त:करण में उत्पन्न होती है तथा अन्त:करण के अधिपति परब्रह्म परमात्मा अन्त:करण के नियन्ता है । इसी लिये जीवन के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सबकुछ रुचिकर है अर्थात् जीवमात्र का कल्याण करन वाला है।

वचनं रुचिरं दृढ भक्ति विराग सदाचरणं रुचिरं रुचिरा ।
परिषद्भिज भक्तजना रुचिरा रुचिरा धिपते रखिलंरुचिरम् ॥१७॥

श्रीजी महाराज ने अपने भक्तों जो मोक्ष का वचन दिया वह भी रुचिर है। महाराज की दृढ भक्ति तथा वैराग्य तथा सदाचार रुपी श्रेष्ठ आचरण भी रुचिर है। महाराज की सभा में अपने भक्तजनो को चुरिर है । रुचिजीव के अन्त:करण में उत्पनन होता है तता अन्त:करण के अधिपति अन्तर्यामी परब्रह्म परमात्मा उसके नियन्ता है, इसलिये जीव के रुचि के अधिपति परमेश्वर का सब कुछ रुचिर है। अर्थात् जीव मात्र का कल्याण करने वाला है।

हरिकृष्ण मुदार मनन्तमजं प्रणातार्ति हरं जलदाभतनुय ।
करुणा र्द्रदृशं वृषभक्ति सुतं नमनं विदधे रुचिर रुचिरम् ॥१८॥

नित्यानंद मुनि कहेतै हं कि हमारे इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण जिसाक नाम मार्कण्डेय मुनि ने हरिकृष्ण एसा नाम रखा है वह उदार मूर्ति हैं। अजन्मा हैं। अनंत है। उनके गुणों का तथा कार्यो का कोई अन्त नहीं है। शरमागत के सभी दु:खो का नाश करने वाला है। मेघ के समान स्याम व्रण की शरीर वाले है। भक्तों के उपर करुणामय दृ,टि रखने वाले हों . ऐसे धर्मदेव तथा भक्ति माता के पुत्र को जो नमस्कार करता है वह भी लंबे समय तक रुचिकर हो जाता है।

इदयर्थभृतं मुनिनित्यकृतं रुचिरं स्तवनं जनपावनम् ।
श्रुतमात्र मनो मलनाशकरं जनातपहरं भवतीष्टकम् ॥१९॥

नित्यानंद मुनि द्वारा रचित गूढार्थ से भरा हुआ स्तोत्र अष्टक जीवमात्र को पावन करनेवाला है। सुनने वाले के मन मैल को दूर करने वाला है। जीव मात्र के जन्म-मरण के ताप का नाश करने वाला है।

नीचे के मंदिर के महंतश्री तथा श्री घनश्याम महाराज (कालुपुर मंदिर) के नये पुजारी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग अमदावाद के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी गुरु भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (नाथद्वारा महंतश्री) की नियुक्ति की गई है। नाथद्वारा मंदिर के उप महंत पद पर स.गु. शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी गुरु स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी की नियुक्ति की गई है।

अमदावाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर रंगमहल के श्री घनश्याम महाराज के पुजारी स.गु. स्वामी देवकृष्णदासजी गुरु स्वामी नरनारायणदासजी (मूली) तथा अक्षर भुवन बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के पुजारी स.गु. शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी गुरु स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी (कलोलवाला) की नियुक्ति की गई है।

हिमालय की गोद में पुण्य भूमि ऋषिकेश के आंगन में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण

- शास्त्री स्वामी रामकृष्णद
(कोटेश्वर गुरुकुल)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा अमदावाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा अमदावाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से पुण्य भूमि ऋषिकेश के आंगन में अपने कालुपु रमंदिर द्वारा ता. १-७-१६ से ता. ७-७-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा का आयोजन किया गया था । अहमदावाद से लगभग ७०० हरिभक्त रेलवे-विमान द्वारा वहाँ पहुंचकर ७ दिन तक कथा का श्रवण किये थे । सभी के लिये ७ दिन तक रहने खाने की उत्तम व्यवस्था की गई थी । ऋषिकेश में गंगा के पाट आये हुये श्रीवान प्रस्थाश्रम (काली कमली-वाला पंचायत क्षेत्र) में महिमालय की तलहटी में तथा गंगाजी के पावन सानिध्य में ७ दिन कहाँ वीत गया इसका ख्याल भी नहीं रहा । कथा के साथ प्रतिदिन गंगा के तट पर महापूजा तथा प्रतिदिन सायंकाल गंगा आरती का भी सभी को मंगल लाभ मिलता था । कथा के बीच में घनश्याम जन्मोत्सव, श्रीहरियाग पट्टाभिषेक, सोमवती अमावास्या, गंगा स्नान तथा रथयात्रा का पावन पर्व भी धूमधाम से मनाया गया था ।

कथा के समय पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अमदावाद) पू. देव स्वामी (नारायणघाट) पू. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर), पू. हरिचरण स्वामी, पू. सिद्धेश्वर स्वामी, पु. मुनि स्वामी, पू. कुंजविहारी स्वामी, पू. दिव्यप्रकासद स्वामी, इत्यादि संत ७ दिन तक उपस्थित रहकर सुंदर मार्गदर्शन - सहयोग तथा आशीर्वाद का लाभ दिये थे ।

कथा के यजमान पद का लाभ श्री अरविंदभाई दोंगा परिवार, श्री संजयभाई, तथा जयेशभाई परिवार (अमेरिका) श्री रतिभाई पटेल परिवार इत्यादि भक्तोंने सुदंर लाभ लिया था । श्री जयरामभाई कानाणी, श्री रतिभाई पटेल, श्री रमेशभाई कोठारी, श्री अमृतभाई पटेल इत्यादि भक्तोने खूब मेहनत करके संतो-भक्तों के लिये सुंदर व्यवस्था की थी ।

समग्र आयोजन में अपने हरिद्वार मंदिर के महंत श्री मुकुंद स्वामी का सहयोग रहा है ।

ऐसे आयोजन ऐसे पवित्र स्थान में होते रहे इस तरह का सुंदर आशीर्वाद पू. महाराजश्रीने दिया था ।

अन्य सेवा करने वाले यजमानो की नामावलि -

फूलहारनी सेवा : समस्त समाज गांधीनगर ।

घनश्याम जन्मोत्सव : दिलीपभाई लवजीभाई ठक्कर (दियोदर)

रथयात्रा के यजमान : जशवंतभाई मोदी परिवार (अमदावाद)

सुंदरकांड के यजमान : जयरामभाई कानाणी (अमदावाद)

ठाकुरजी के अभिषेक के : अरविंदभाई दोंगा परिवार (अमदावाद)

गाडी के : भीखाभाई (जुंडालवाला) तथा विष्णुभाई (घुंघट होटल वाला) ।

हरिभक्तों की रसोई के यजमान की नामावलि

ता.१-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) चंद्रप्रकाश चुनीलाल पटेल (राणीपवाला)

सायंकाल रसोई के यजमानश्री : (१) अंबालाल कोदरदास पटेल (गवाडावाला) कृते विनुभाई अंबालाल ।

ता.२-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) जशवंतभाई मोदी परिवार (अमदावाद)

सायंकाल रसोई के यजमानश्री : (१) बिपीनभाई सोनी परिवार (अमदावाद)

ता.३-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) अ.नि. तुलसीभाई नारदास पटेल थात वासुदेवभाई नागरदास पटेल कृते प्रभाबहन तथा लीलाबहन ।

सायंकाल रसोई के यजमानश्री : (१) श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल कृते अमृतभाई पटेल तथा जगदीशभाई कालीदास दरजी ।

ता.४-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) ईलाबहन पटेल (सोजा-मणीनगर)

सायंकाल रसोई के यजमानश्री : (१) विनुभाई पोपटभाई पडसाला (बापूनगर) (२) मेमनगर सत्संग

समाज (भक्तिनगर) (३) हर्षदभाई रामभाई पटेल कृते मितुल (अमदावाद) (४) अकोलिया परिवार - अरविंदभाई के ससुराल पक्षवाले ।

ता.५-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) गंगारामभाई महादेवभाई पटेल (मेमनगर-अमदावाद) कृते ईश्वरभाई नटवरभाई, गणपतभाई ।

सायंकाल रसोई के यजमानश्री : (१) अ.नि. शांताबहन वालजीभाई कोठारी परिवार (गवाडा) कृते कोकिलाबहन रमेशभाई कोठारी तथा निधिकोठारी ।

ता.६-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) महालक्ष्मी परिवार कृते डाह्याभाई बाभाईदास पटेल तथा गोविंदभाई बाभाईदास पटेल ।

सायंकाल रसोई के यजमानश्री : (१) अ.नि. वल्लभभाई भुराभाई नसीत कृते नरसिंहभाई तता प्रवीणभाई (२) गवाडा सत्संगी भाई-बहन तथा अन्य गाँव के सत्संगी की तरफ से कृते रमेशभाई कोठारी ।

ता.७-७-१६ दोपहर की रसोई के यजमानश्री : (१) सुरेशभाई महासुखलाल सोनी परिवार कृते दिलीपभाई तथा नेहलभाई

संतोकी रसोई के यजमान की नामावलि

ता. १-७-१६ : (१) अंबालाल कोदरदास पटेल (गवाडावाला) कृते विनुभाई पटेल ।

ता. २-७-१६ : (१) अ.नि. कांतिभाई मोतीलाल पटेल (गांधीनगर) कृते कांताबहन (२) गं.स्व. शकरीबहन अंबालाल पटेल - तथा रमीलाबहन रमेशभाई पटेल (नारायणघाट) (३) भीखुभाई मोहनभाई पटेल (वेजलपुरवाला-अमदावाद) (४) बिपीनभाई सोनी परिवार (अमदावाद) ।

ता. ३-७-१६ : (१) कनुभाई पी. पटेल (कल्याणपुरावाला-माणसा) (२) अ.नि. कांतिभाई मोतीभाई पटेल (अंबापुर-गांधीनगर) (३) अ.नि. संतोकबहन जीवणलाल पटेल (आजोलवाला) कृते रमेशभाई तथा सीताबहन (४) प्रवीणभाई देसाई, मधुभाई गेवरिया, चतुरभाई कोटडीया (कानाणी गृप) (५) श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल कृते अमृतभाई तथा जगदीशभाई कालीदास दरजी ।

ता. ४-७-१६ : (१) श्री स्वामिनारायण मंदिर दर्षद कोलोनी (२) मेमनगर सत्संग समाज (भक्तिनगर) (३) नवीनचंद्र नटवरलाल चोकसी (अमदावाद) (४) अ.नि. नवीनचंद्र बाबुलाल पटेल (अमदावाद) (५) मगनभाई तथा घनश्यामभाई सुहागिया (अमदावाद) (६) ईलाबहन हर्षदभाई पटेल (अमदावाद) कृते मितुल । (७) चंद्रिकाबहन विनोदभाई पटेल (मेमनगर-अमदावाद) (८) परसोतमभाई तथा चंपाबहन, कहुंबाबहन (बापूनगर) (९) मावजीभाई अंबाभाई धडुक (अब्राह्मपुरा अमरेली) (१०) अ.नि. कुंवरबहन परसोतमभाई देसाई कृते दासबाई (११) बटुकभाई नारणभाई मांगुकीया कृते दासभाई (१२) वसंतीबहन कृष्णकांतभाई (मेघरजवाला-अमदावाद) (१३) धीरुभाई सोरठीया ग्रुप (एप्रोच-बापुनगर) (१४) रमणभाई चतुरभाई पटेल - कृते सुमनभाई (साबरमती) (१५) महेन्द्रभाई छोटाभाई पटेल कृते सुमनभाई (साबरमती) (१६) समस्त सत्संग मंडल (श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर)

ता. ५-७-१६ : (१) पटेल बाबुभाई कचरादास (विहारवाला) (२) लीलाबहन जयरामभाई कानाणी (अमदावाद) (३) मनसुखभाई जवेरभाई पटेल कृते अमिताबहन (४) परसोतमभाई बचुभाई रादडीया (बापुनगर) (५) भावनाबहन मगनभाई लहरी (बापुनगर) (६) मंजुलाबहन राजुभाई गजेरा (बापूनगर) (७) मधुबहन राजुभाई गजेरा (बापुनगर) (८) भावनाबहन रमेशबाई कापडीया (बापुनगर) (९) दलसुखभाई ठाकरसीभाई (१०) वल्लभभाई पोपटबाई खीचडीया (बापुनगर)

ता. ६-७-१६ : (१) अ.नि. भोलाभाई बेचरभाई पटेल (विहारवाला) (२) अ.नि. वल्लभभाई भुराभाई नसीत (३) अ.नि. बेचरभाई शिवरामभाई भुराभाई नसीत (३) अ.नि. बेचरभाई शिवरामभाई पटेल (आजोलवाला-महेसाणा) (४) गं.स्व. रुबीबहन अंबालालभाई कोदरदास पटेल (गवाडावाला) (५) अ.नि. फरसुरामभाई छगनभाई त्रिवेदी सुरेशभाई त्रिवेदी (६) श्री घनश्याम महिला मंडल - नारायणघाट (७) श्री स्वामिनारयण मंदिर - नवावाडज (८) अ.नि. बेचरभाई गोबरदास पटेल (गवाडा) नारणभाई, नटुभाई (९) गीताबहन दिनेशभाई तथा हरिभक्त बहनो (नारायणघाट)

ता. ७-७-१६ : (१) रमेशभाई अंबालाल पटेल (कुडासणवाला-गांधीनगर) कृते सुशीलाबहन ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

इस वर्ष बरसात अहमदााद को खूब प्रतीक्षा करवाया। लेकिन म्युजियम में रखी हुई पुस्तकों की देख भाल करने की राह नहीं देखनी चाहिए। इसलिये सवा दोसो वर्ष पहले की श्रीजी महाराज के समय की तथा अपने नंद संतो ने पुस्तक के अनुरुप कलाकारी के उत्तम नमूनारुप चित्र बनाया है। जिस के रंग आज भी ताजा लगते हैं। उनके रखरखाव का कार्य तेजगति से चल रहा है। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के सूचनानुसार किसी भी प्रकार के केमिकल के उपयोग बिना अपनी परंपरागत औषधिसे पुस्तको के रखरखाव का कार्य म्युजियम में चल रहा है। इसके अलांवा ७-९-१६ रविवार को म्युजमय में समूह महा पूजा का आयोजन किया गया है। पवित्र श्रावण मास में तथा प्रसादी की वस्तुरुपी श्रीजी महाराज के सानिध्य में ऐसा अवसर प्राप्त होने का भक्तों को खूब आनंद है, भक्त लोग इस अमूल्य लाभ को लेकर धन्य हो गये हैं।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**
नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

૧.પ.પૂ. ધ.ધુ.આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ દ્વારા ગંગા કિનારે પવિત્ર યાત્રા સ્થળ ઋષિકેશમાં આયોજીત શ્રીમદ્ સત્સંગિ જીવન કથા પારાયણનું પાન કરાવતા સ.ગુ.શા. સ્વામી રામકૃષ્ણદાસજી સાથે સંત હરિભકતોનો વિશાળ સમુદાય

૧.સ્વીડન (યુ.કે.) મંદિરના ૨૫માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા, સભામાં દર્શન આપતા, શોભાયાત્રામાં દર્શન આપતા તથા હરિભક્તો સાથે પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી સાથે શા.સ્વામી નારાયણમુનિદાસજી અને શા.સ્વામી વિશ્વવિહારીદાસજી.

૨. વિહોકન મંદિરમાં આમ્રમહોત્સવ તથા રથાયાત્રા દર્શન.

૧.આપણા એટલાન્ટા (અમેરિકા) શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરના પમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજી સમક્ષ અન્નકૂટ દર્શન અને ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી તથા સભામાં આશીર્વચન પાઠવતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી.
૨. આપણા ક્લીવલેન્ડ (અમેરિકા) શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરના નવમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીના અભિષેક દર્શન, અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા યજ્ઞ વિધિ કરતા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવના પૂજારી બ્ર.સ્વામી રાજેશ્વરાનંદજી તથા સંતો.

૧.શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર લાલોડા (ઈડર દેશ)માં પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં યુવા સત્સંગ શિબિર. ૨.વિસનગરમાં શ્રી નરનારાયણ દેવ યુવક મંડળ દ્વારા આયોજીત ત્રિદિનાત્મક જ્ઞાનસત્રમાં દર્શન આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી તથા યુવક મંડળના યુવકો પુષ્પમાળા અર્પણ કરતા. ૩. ભાભર (બનાસકાંઠા) ચાતુર્માસમાં રાત્રી કથામૃત પાન કરાવતા શા.સ્વામી રામકૃષ્ણદાસજી (કોટેશ્વર) ૪. જીવરાજપાર્ક (અમદાવાદ) મંદિરના ૨૭માં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા મહંત શા.સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા હિંડોળા દર્શન.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जुलाई-२०१६

रु। ४५,०००/-	अ.नि. विद्याकुमारी पांडे उर्फ बचीबेन कृते प.पू. मोटा महाराजश्री - श्री स्वा.मंदिर, कालुपुर, हवेली.	रु। ११,०००/-	अंबिका ईन्डस्ट्रीझ, दहेगाम
रु। ११,०००/-	पार्षद कानजी भगत (ज्ञानबाग) वडताल	रु। ५,१००/-	प्रकाश काचा तथा भाविक चौहाण - काचा टेलर्स (यु.के.)
रु। ११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल - सायन्स सीटी-अमदावाद	रु। ५,०००/-	लताबहन जीतेन्द्रभाई पटेल -असलाली
		रु। ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल-अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जुलाई-२०१६)

ता. ०२-०७-२०१६	शिल्पाबहन विपुलभाई पटेल - अमेरिका
ता. ०३-०७-२०१६	सौमिलभाई हसमुखभाई शाह - अमेरिका
ता. ०७-०७-२०१६	राहुल जीतुभाई पटेल - भाउपुरा
ता. १९-०७-२०१६	पारुलबहन विठ्ठलभाई पटेल - कोलोनीया
ता. २४-०७-२०१६	शिवाभाई रेवीदास पटेल परिवार (विमल गृप) - महेसाणा
ता. २५-०७-२०१६	पटेल रमेशचंद्र गमनलाल, हळवद (पू. भक्तिहरि स्वामी (रणजीतगढ श्रीहरिकृष्णधाम) की प्रेरणा से
ता. ३०-०७-२०१६	श्रीनरनारायणदेव भक्ति मंडल बहेनो (चराडवा) कृते सां.यो. कंचनबा तथा हीराबा-ध्रांगध्रा
ता. ३१-०७-२०१६	प्रात: अ.नि. डॉ. रमणलाल मगनलाल पटेल पुण्यतिथि निमित्त (कुंडलवाले) ह. परेशभाई पटेल
	साम: भरतभाई मंगलदास पटेल - अमेरिका, शांताबेन भरतभाई पटेल - अमेरिका, कृपाल भरतबाई पटेल - अमेरिका, मितलबेन कृपालभाई पटेल - अमेरिका, कृणाल भरतभाई पेटल - अमेरिका - जलपाबेन कृणालभाई पटेल - अमेरिका

ता. ५-९-२०१६ को सोमवार गणपति पूजन

श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार भाद्र शुक्ल चतुर्थी के दिने गणपतिजीका पूजन करना चाहिए उसी के अनुसार श्री स्वामिनारायण म्युजियममें श्रीजी महाराज के करमकल द्वारा पूजित श्री गणपतिजी का पूजन ता. ५-९-१६ सोमवार के दिन प्रात: ८-०० से १०-०० के बीच रखा गया है।

पूजा में सपत्नीक एवं दो व्यक्ति रु। ११००/- भर के बैठ सकते हैं। बैठने वाले के प्रसाद की व्यवस्था म्युजियममें की गई है।

विशेष जानकारी लिये म्युजियम : ०७९-२७४८९५९८ • दासभाई : ९९२५०४२६८६

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रात: ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सत्संग के गौरव की रक्षा करनी चाहिये

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान अहमदाबाद में विराजमान थे । सभा चल रही थी, उसी समय दो-चार हरिभक्त आकर कहने लगे - महाराज ? महाराज ! एक बहुत खराब काम हो गया । क्या हो गया ? प्रभु ? हमने सुना है कि कोई हमारे दो संतो को पकडकर ले गया है । कौन ले गया होगा ? खोज तो कीजिये कहाँ ले गया है । जहाँ यह बात चल रही थी वही पर आकर एक उद्धत जैसा व्यक्ति आया वह अंबाराम था, वह आते ही बोलने लगा कि ''हमे खबर है कि उसके हाथ में त्रिशूल ता तथा जय अंबे, जय अंबे बोलते हुये सभा में आया । चालू सभा में जैसा तैसा बोलने लगा ।

श्रीजी महाराज कहते हैं कि आ ओं अंबारामजी आप क्या कहते है ? आप इतना गरम क्यों हो रहे हैं ? लेकिन अंबाराम क्या हो गया था कौन जाने । श्रीजी महाराज की बात सुना ही नहीं और कहता गया - अभी और दो साधु को उठा ले जाना है । अभी कितनों को ले जायेंगे । सभा में खबर पड़ गयी कि अपने जो दो साधु खो गये है, उसमें अंबाराम का ही हाथ है । जब अंबाराम सभा में से बाहर निकला तो दो हरिभक्त जाकर पूछे साधु को घर रखना है य उन्हें ऐसा ही रखना है या काम करवाना है ? नौकरी करानी है ? कि भागीदारी ? उनसे कहा कि उन्हें गोमतीपुर के अखाडा में दे दिया हूँ । भक्तों को ऐसा हुआ कि अंबाराम का जो होना हो वह हो लेकिन साधुओं का पता तो चल गया । भक्त उस अखाडा में गये देखे तो दोनों साधुओं को बांधकर रखा गया है । वहाँ पूछा कि इन साधुओं को क्यों बांधकर रखे हैं ? इन्हें ऐसा बांधे है कि छूटेगे ही नहीं । स्वामिनारायण भगवान के साथ द्वेष है उन्हीं के ए साधु है, इस लिये नहीं छोडेगे । अहमदाबाद के हरिभक्त बहुत चालाक होते हैं । उनके मन में हुआ कि संतो के लिये कुछ करना तो पडेगा । दोनो ने विचार किया कि गरम होकर काम नहीं होगा, ठन्ढा होकर काम सरल हो जायेगा । इसलिये दोनो बाहर जाकर धोती-बड़ा-लंबा कुर्ता पहनकर गले से कंठी निकाल कर माथे का चन्दन मिटाकर एक नौकर को साथ में लेकर गोमतीपुर के अखाडे में पहुच गये । अखाडे वाले शेठजी समझकर खूब आव भगत किये । आइये शेठजी.... आइये शेठजी ..... । महंतजी से मिलना हुआ । महंतजीने कहा कि शेठजी आप आज्ञा की जिये, आने का कारण बताइये । महंतजी ? रामजी की कृपा है और लक्ष्मीजी की दया है । भंडारा करना है । अच्छा में अच्छा ? यहाँ कितनी मूर्ति हैं ? यहाँ चार सौ मूर्ति है ? जयजयकार के साथ भंडारा कीजिये । जितना भी खर्च हो उसकी चिंता नहीं ? कल ही रसोई की व्यवस्था कीजिये । अब वे दोनो भीतर घूमने निकले आगे देखा तो एक खंभे में दोनो साधुओं को ऊपर से नीचे तक बांधा गया है । साथ में महंतभी थे । महंत को सुनाकर कहा कि महंतजी कला का भंडारा कैंसिल । क्यों कैंसिल ? दोनो ने कहा कि जहाँ पर स्वामिनारायण के साधु होते है वहाँ पर मैं भंडारा नहीं देता हूँ । तुरतं महंतने कहा कि शेठजी आप इसकी चिंता मत करें इन्हें अभी छोडवा देता हूँ । अरे भाई इन्हें तुरंत छोडो । उन्हें उसी समय छोड़ दिया गया । अब महंतजी कहने लगे कि कल का भंडारा तो निश्चित न ? हाँ आप दिव्य बंडारे की कल तैयारी कीजिये ।

दूसरे दिन वहाँ अखाडे में मालपूवा, खीर इत्यादि की खूब दिव्य तैयारी होने लगी । बाद में शेठजी की प्रतीक्षा करने लगे कि शेठजी अभी आयेंगे । प्रसाद की पेटी तैयार करके रखा गया था । बिल तैयार रखी गई थी । लेकिन शेठजी नहीं आये, आज तक नहीं आये । आज तारीख में उधार खाता ही बोल रहा है ।

इधर वहाँ से छूटकर दोनो संत दौडते हुये भगवान स्वामिनारायण के पास आये । स्वामिनारायण भगवानने पूछा संतो आद जो दिन से आपलोग कहाँ खोग ये थे । महाराज ! हमें पकडकर अखाडा में ले गये वहाँ रस्सी से बांधदिया था । ऐसा वे लोग कर रहे थे कि इसी तरह रिझा-रिझाकर मार डालेंगे । संत ! आप लोग कैसे छूटे । महाराज ! कोई दो शेठ आये थे वे कह रहे थे कि हमें भंडारा देना है । लेकिन कहने लगे कि जहाँ स्वामिनारायण के साधु होते हैं वहाँ भंडारा नहीं देते । बाद में भंडारा के लालच में हमे छोड़ दिया । महाराजने कहा कि वे शेठ मिलें तो आप उनका सन्मान करेंगे । महाराज ! उन्हीं की वजह से छूटे है । महाराजने सभा की तरफ इशारा करके कहा कि जो शेठ है वें खडे हो जांय । वे दोनो शेठ रुपधारी खड़े हो गये । महाराज ने कहा कि देखो संतो आप दोनो को छुडाने के लिये ये आये थे ।

मित्रों ! हम भव्य मंदिरों में बैठकर सुख से भजन भक्ति करते हैं । यह सब अपने पूर्वजो के तप का फल है । आप सभी को इसका अनुभव है । कोई बेटा आराम से रहता हो, खूब खाता-पिता हो, यह देखकर समाज के लोग कहते हैं कि अपने बाप-दादे की कमाई खा रहा है । इसके बाप-दादा मकान बनादिये, जमीन ले लिये, अब वह आनंद कर रहा है । अपने लिये यह सत्य हो सकता है । आज अपना तप कितना ? आज अपनी भक्ति कितनी ? लेकिन अपने पूर्वजो के पुण्यका फल, संत-हरिभक्त कितने पुरुषार्थ किये होंगे, सहन किये होंगे । उन्हीं के तप के प्रभाव से हम सुखी है । आज हम सुख से भजन करते हैं, इसको भुलाना नहीं चाहिये । अधिक नहीं कर सकें तो कोई बात नहीं, लेकिन उस परंपरा का गौरव मानना, उस परंपरा को कायम रखना अपनी फरज है । इतना भी करेंगे तो भगवान स्वामिनारायण संत-भक्तों की प्रसन्नता मिलेगी और सुखी होंगे ।

●

नियम में रहना सुखकारी है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

अपने यहाँ एक सुप्रिद्ध कहावात है कि ''मनुष्य मात्र भूल के पात्र'' इस वाक्य का सहारा लेकर वारंवार होने वाली भूल को ढंकने का प्रयत्न किया जाता है । लेकिन एक वात का ध्यान रखना चाहिए कि एक वार जो भूल हो गोई पुनः वही भूल नहो इसका सदा ध्यान रखना चाहिए ।

भूल होना स्वाभाविक है, लेकिन जो भूल हुई उसका पश्चात्ताप नहो और बार-बार भूल होती रहे तो किसी बड़ी आपत्ती में आने की संभावना हो जाती है ।

''एक वार थयेली भूल क्षमाने पात्र छे ।
बीजीवार थयेली भूल धृणा के पात्र छे ।
अने त्रीजीवार थयेली भूल सजाने पात्र छे ॥''

एक गाँव में संत-महात्माओं का विशाल आश्रय था । महात्मा अपने शिष्यो के साथ उसी आश्रममें रहते थे । महात्माजी अपने शिष्यो की सुरक्षा के लिये एक नियम बनाये थे कि कोई अज्ञात व्यक्ति कोई वस्तु दे तो उसे नहीं लेना । इस नियम का पालन सभी शिष्य आदर से करते थे । शिष्य वही सच्च जो गुरु की आज्ञा का पालन करे . उसी आश्रम में एक नया शिष्य आ गया । उसे भी गुरुजी के इस नियम को बताया गया था । एक दिन की वात है कि कोई शेठ वहाँ आया जो गुरुजी के परिचय वाला था, वह शेष्ठी सभी शिष्यो को कुछ भेंट देना प्रारंभ किया । सभी शिष्य गुरुजी की आज्ञा में आकर कुछ भी नहीं लिये । लेकिन नये शिष्य ने लालच में आकर उस वस्तु को स्वीकार करली । इस समय वह बिचारा भूल गया । इस प्रथमवार की भूल को गुरुजीने माफ कर दिया और कहे कि आगे पुनः एसी भूल नहीं करना ।

गुरुजीने माफ कर दिया, लेकिन शिष्य के मन में हुआ कि मुझे कोई सजा नहीं हुई और वस्तु भी मिल गई । थोडे समय बाद कोई दूसरा भक्त आया । वह भी सभी को वस्तु देना प्रारंभ कर दिया । इस समय भी वह शिष्य लालच में आकर पुनः वस्तु स्वीकार कर लिया । इस की जानकारी महात्माजी को हुई, उन्हें ऐसा हुआ कि शिष्यने भूल का पुनरावर्तन किया है । गुरु को शिष्य पर घृणा हुइ कि इस प्रकार का वर्तन ठीक नहीं है । मनाकरने के बाद भी भूल की । थोडा नाराज हुये । फिर समझाये और कहे कि पहली वार भुल हुी तो जाने दिया, तुम्हे सावधान रहने की चेतावनी भी दी थी । फिर से वहीं भूल हुई है यह ठीक नहीं । अब आगे से भूल न हो इसका ध्यान रखना ।

पेईज नं. २४

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "प्रत्येक कार्य ईमानदारीपूर्वक जागरुक होकर करना चाहिये"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

यह वात कभी भूलनी नहीं चाहिये कि भगवान अपने अंदर बैठकर सभी क्रियाओं को देख रहे हैं। भगवान जब प्रगट होते है तब अन्दर ही प्रगट होते है। क्योंकि परमात्मा अन्तरमें विद्यमान है परंतु हम इस बात को भूल जाते हैं। खूब प्रेम की भावना आये श्रद्धा तथा सत्वगुण प्रवर्तित होता हो, सारे कार्य करने की अन्तर में इच्छा हो तो समझना चाहिये कि हम भगवान को भूले नहीं है। जब दूसरों के अवगुण देखाई देने लगे तो समझना चाहिये कि थोडे समय के लिये भगवान भूल गये हैं। परंतु जब ख्याल आजाय तो स्वयं से कहना चाहिये कि यह हमारे लिये योग्य नहीं है। अपने भीतर अधर्म की भावना अधिक होती है, तथा धार्मिक भावना कम होती है। इस लिये ऐसा प्रथम करना चाहिये कि जिससे अच्छे अच्छे कार्य हों । जान अनजान में खराब विचार आ जाय तो ऐसा विचार भी आ जाता है। कि यह कार्य नहीं करना है। इसमें कारण यह है कि अन्दर बैठे हुये परमात्मा ऐसी प्रेरणा देते हैं कि यह काम करो, यह काम मत करो, इसके लिये आवश्यक यह है कि अन्दर की बात सुनने की भावना होनी चाहिये।

हम खा-पीकर जैसे भी शरीर को स्वस्थ रखने का प्रयास करते हैं, वह ताकात वाली शरीर भी ईन्द्रियों के अधीन हो जाती है। इन्द्रियों के अनुकुल शरीर का व्यापार है। शरीर से पर इन्द्रियां, इन्द्रियों से पर मन, मन से पर बुद्धि, बुद्धि सेपर आत्मा है। जैसे अपने सामने बहुत सारी खाने की सामग्री हो लेकिन खाने का मन नहोतो खायेंगे नहीं । इसका मतलब यह कि मन के कहने से बुद्धि में विचार आता है। बुद्धि विचार करके निर्णय देती है। तभी कार्य सिद्ध होता है । अपनी शरीर में सबसे अधिक ताकत वाला आत्मा है। इसका कारण यह है कि वह है तो सभी कार्य होता है। जैसा विचार अता है वैसा चित्त हो जाता है। लोभ तथा लालच का विचार जब आता है तब चित्त वैसा चिंतन करने लगता है। किसी भी विषय के लिये छल-कपट नहीं रखना चाहिये। परमात्मा के ऊपर खूब प्रेम होना चाहिये। परमात्मा का दास बनकर रहना चाहिये। दासत्वभाव से तथा इमानदारी से जो भगवान की सेवा करते हैं, उनके ऊपर भगवान खूब प्रसन्न होते हैं। भगवान सच्चे भक्त के ऊपर विशेष ध्यान रखते हैं। एक राजा के महल में एक संत महात्मा आये। वे राजा से कहने लगे कि हम रात में रुकना चाहिते हैं।

राजाने कहा कि यह हमारा महल है कोई धर्मशाला नहीं। आप महल से बाहर निकल जाइये। महात्माने कहा कि यह महल आपको कैसा मिला। राजाने कहा कि यह महल मुझे मेरे पिता से मिला है। महात्मा ने कहा कि आपके पिता को किसने दिया ? राजाने कहा कि मेरे दादाजीने दिया। महात्माजीने पूछा कि आपके पिताजी तथा दादाजी कहाँ है ? राजाने कहा कि अब वे दुनिया में नहीं रहे। महात्माने कहा कि दुनिया छोड़ के चले गये इस महल को छोड़कर चले गये, उनके साथ कोई नहीं गया ? आज आप यहाँ रहते हैं, थोड़े समय के लिये जहाँ रहा जाय उसे धर्मशाला कहते हैं। इस जगत की वस्तुओं की भी यहीं स्थिति है। हमें भी जगत के सम्बन्धमें न रहकर परमात्मा से सम्बन्धरखना चाहिये । क्योंकि परमात्मा का सम्बन्धही शास्वत है। जिस तरह सोना का आकार भले बदल जाय लेकिन तो वही रहती है ठीक उसी तरह मनुष्य की शरीर अवश्य बदलेगी लेकिन भक्ति की कीमत तो रहेगी ही। इमानदारी से भक्ति की जाय तो शुद्द सोने की जैसे कीमत होती है वही कीमत शुद्ध भाव से

की गई भक्ति की होती है।

मनुष्य का जन्म मिला है इस लिये उसे सार्थक करना चाहिये भजन-भक्ति से जीवन की सार्थकता है । महाराजने कहा है कि इस तरह करने से, थोडा सहन करने से पीछे बड़ी शांति मिलेगी । इसका स्वयं को विचार करते रहना चाहिये । महाराज से प्रार्थना करनी चाहिए कि इसी जन्ममें कसौटी कीजिये । इसी जन्म में सबकुछ पूरा कर दीजिये, जिससे पुनः आने जाने का सम्बन्धखत्म हो जाय । जो अच्छे भक्तो होते हैं नकी स्कूल के अच्छे बच्चों की जैसे कसौटी होती है । आत्मा की आवाज सुनते रहना चाहिये । परमात्मा को प्रार्थना करनी चाहिये कि हमारे जीवन में जो भी हो वह आपकी ईच्छा के अनुसार हो । अपने अन्तःकरण को शुद्ध रखना चाहिये, जो भी काम करें वह इमानदारी से करना चाहिये ।

●

संस्कार रुपी संपत्ति

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

संपत्ति कई प्रकार की होती है । स्वान के मालिक की सम्पति खनिज संपत्ति है । किसान की संपत्ति खेत पशु हैं । व्यापारी की माल-सामान संपत्ति है । जमीनदार की जमीन संपत्ति है । मकान वालों की स्थावर संपत्ति है । धनिकों की धन संपत्ति है । ऋथि-मुनियों तप संपत्ति है । संस्कारी जीव की संस्कार संपत्ति है । यह उत्तम संपत्ति कही जाती है । संस्कार से सभी वस्तुओं की तथा जीवात्मा की शोभा होती है।

संस्कार अर्थात् क्या ? जो समाज को कसौटी पर रख सके उसे संस्कार कहते हैं । उसी में सुखनिहित है । समाज की गाडी को सुख के स्टेशन तक पहुंचने के लिये संस्कार के ट्रेक की जरुरत है । संस्कार से समाज का विकास होता है । संस्कार से समाज सुखी होता है । संस्कार से समाजका उद्धार होता है।

संस्कार मानवजीवन का मूल है . जिस का संस्कारुपी मूल कमजोर हो वह मानव का सत्संग टिक नहीं सकता । संस्कार मनुष्य की आत्मा है । संस्कार से मनुष्य की आत्मा स्वच्छ रहती है । आत्मा के स्वच्छ होने पर शरीर अपने आप स्वच्छ रहती है । जिस तरह आगे का भाग स्वच्छ रखने से घर स्वच्छ नहीं रहता है । इसी तरह शरीर के स्वच्छ रखने से आत्मा स्वच्छ नहीं रहती । आत्मा को तता मन को स्वच्छ रखना हो तो संस्कार की आवश्यकता पड़ती है । हृदय को स्वच्छ, उज्जवल, शांत बनाना हो तो संस्कार रुपी दीपक प्रगट करना पडेगा । इसके बाद ही प्रकाश होना संभव है।

मानव के लिये संस्कार जरुरी है । संस्कार के विना मानव पत्थर के समान है । संस्कार ग्रहण करने के लिये भारत की भूमि पवित्र है । मानव जीवन में सरलता, उदारता, शिष्टाचार का होना आवश्यक है । संस्कार से ही मानव मोक्ष का भागी बनता है।

धार्मिक संस्कार रुपी पानी का सिंचन करना चाहिये । जिससे स्वयं का तथा पूरे परिवार का जीवन सुखमय तथा प्रभुमय बन सके । मानव देह मिलने का सदुपयोग करना चाहिये । क्योंकि मानव देह वार-वार नहीं मिलेगा । भगवान स्वामिनारायणने मानव के सामान्य नियम को शिक्षा में समझाये है, जो उसेक अनुसार आचरण करेगा उसका पतन कभी नहीं होगा । आचार्य, आचार्य पत्नी, ब्रह्मचारी, साधु, त्यागी, गृहस्थ, स्त्री-पुरुष सधवा-विधवा इत्यादि के नियम (धर्म) का बड़ी सरलता से निरुपण किये है । भगवानने दया करके शास्त्र रुपी भंडार सत्संग समाज को दिया है । यही सबसे बड़ी संपत्ति है, बाकी संपत्ति तो दिया है । यही सबसे बड़ी संपत्ति है, बाकी संपत्ति तो नष्ट हो जायेगी । मायिक संपत्ति है । जिसके जीवन में संस्कार रुपी संपत्ति है उसी के जीवन में शांति और सुख है।

संस्कार रुपी संपत्ति में - संतोष, दया, क्षमा, प्रेम, एकता परोपकार, निःस्वार्थ का भाव, इत्यादि गुण समाये हुये हैं । अब आगे आज के जमाने पर विचार करते हैं । शिक्षापत्री के श्लोक नं. १९ में महाराजने कहा है कि जिसका बनाया हुआ अन्न तथा जिसके पात्र का जल ग्रहण करने योग्य न होतो उसे नहीं लेना चाहिये । भगवान श्रीकृष्ण के प्रसाद को जगन्नाथ पुरी के प्रसाद

को छोड़कर अन्यत्र भी नहीं लेना चाहिये । अन्न को विना साफ किये भोजन में नही लेना चाहिये । पानी, दूध, तेल, घी को विना गारे उपयोग में नहीं लेना चाहिये । भगवान को अर्पण किये बिना कोई खाने पीने की वस्तु ग्रहण नहीं करना चाहिये । ऐसा करने से धर्म भ्रस्ट होने की संभावना है । आज के दुनिया में फिल्मी कलाकारों को आदर्श माना जा रहा है । टी.वी. देखते हैं तो उसमें अश्लील सीन भी आता है जिसे देखते समय मा-बाप, बेटा-बेटी सभी साथ देखते हैं, उससे संस्कार बिगड़ा है। विवेक खत्म हो जाता है । आपस का आदर भाव भी खत्म हो जाता है । टी.वी. देखने वाला प्रहलाद, जनक, अम्बरीष, नरसिंह महेता, मीरा, द्रोपदी जैसे कोई हुआ नहीं है, कहीं भी सुनने में नही मिला । टी.वी. से संस्कार खत्म हो जाता है । कुसंस्कारो का आक्रमण हो जाता है। करीब ३०-३५ वर्ष से टी.वी. चेनल ने पराविरारिक संस्कार समूल उच्छेदन किया है । भारतीय दिव्य परंपरा के अनुसार स्त्रियां कभी अर्धनग्न स्थिति में अर्थात् अंग प्रदर्शन करती हुई समाज में नहीं आती थी । परंतु टी.वी. आने के बाद आंख में शर्म का पानी सुख गया है । अपने समाज में छुटाछेडा जैसा कोई शब्द नहीं था । कोई पुरुष अपनी पत्नी का तथा पत्नी अपने पुरुष का त्याग नहीं करती थी । लेकिन आजकल के सीरियल को देखकर समाज इतना हद तक गिर गया है कि वह छोटे-बड़े का लिहाजही छोड दिया है । कुमारिका यें नृत्यनारी, नर्त की बन गई है । लड़के भांड बन गये है । इससे यह स्पष्ट हो गया है कि समाज धर्म-विवेक दोनो से भ्रस्ट हो गया है।

जीवन में आहार विहार सभी का विगड गया है । कुसंस्कार के कारण बालक गलत टेव में पड़ जाते हैं । बाद में वही बालक अपनी माता-पिता की बात नहीं मानते । माता-पिता की सेवा नहीं करते । स्वयं का जीवन बरबाद कर डालते हैं । इससे परिणाम स्वरुप मानवता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है । इसलिये हमें संस्कारवान बनना पडेगा । समाज के प्रत्येक वर्ग को संस्कार की परिभाषा बतानी पड़ेगी । पुनः उनमें संस्करा का सिंचन करना पडेगा जिससे समाज सुसंस्कृत होकर सुखमय, शांतिमय जीवन जी सके ।

अनु. पेईज नं. २१ से आगे

आश्रम की प्रतिष्ठा चारो तरफ थी । इस लिये आश्रम में कभी न कभी कोई न कोई आता रहता था । एकबार दो-तीन अनजान व्यक्ति इस आश्रम में आये उसके पास अलंकार था । वह अलंकार उस शिष्य को दिया, वह शिष्य उसे ले लिया ।

वात ऐसी थी कि आने वाले वे दो-तीन लोगचोर थे । वे राजा के महल में से गहना चुरा लाये थे । राजा के खजाने में चोरी हुई इसलिये सैनिक पीछा कर रहे थे । वे सभी आश्रम में आ गये, छानवीन करने लगे । महात्माजी सैनिको को देखकर आश्चर्य में पड़ गये । आने का कारण पूछे । सैनिकों ने कहा कि राजा के महल में से गहनों की चोरी हुई है । ऐसी जानकारी मिली है कि गहना आपके आश्रम में है । गुरुजीने कहा हमारे आश्रम में किसी प्रकार की भेटं सौगात स्वीकार नहीं की जाती । फिर भी आपको छानबीन करना है तो कर लीजिये । सैनिक जब छानबीन किये तो नये शिष्य के पास वह गहना मिल गया । सैनिक उस शिष्य को गहनों के साथ गुरुजी के पास लाये । गुरुजीने कहा कि आप लोगो को जो भी शिक्षा देनी है वह आप सभी इसे दे सकते हैं । पुलिस उसे पकड़कर ले गई । गुरु के मुख से पहलेवाला शब्द निकल पडा -

"एकबार थयेली भूल क्षमाने पात्र
बीजीवार थयेली भूल घृणाने पात्र
अने बीजीवार थयेली भूल सजाने पात्र ॥"

इससे यह सीखना चाहिये कि अपने से कोई भूल हो तो भूल का कारण खोजना चाहिये । जिससे पुनः भूल न हो सजा से बचा जा सके ।

मित्रो ! स्वामिनारायण भगवानने भी वचनामृत में कहा है कि भूल होने पर जिसका अपराधहुआ हो उसकी मांफी मागना और पुनः भूल न हो इसके लिये प्रयत्न करना । लेकिन भूल करके माफी मांगकर पुनःभूल नहीं करनी चाहिये । यदि इस आज्ञा का पालन करेंगे तो निश्चित ही जीवन में दुःख नहीं आयेगा ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में गुरूपूर्णिमा उत्सव संपन्न

परमकृपालु सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने आश्रितों के मोक्ष तथा कल्याण के लिये यह ब्रह्मांड जब तक रहे तब तक अपने महामंदिरो में अपने स्वरुपकी स्थापना स्थाई रहे। सत्शास्त्र नंद-संतो से रचवाया तथा दो देश की गादी करके अपने ही दिव्य धर्मकुल में से अपने स्थान पर आचार्य की स्थापना करके संप्रदाय के आश्रितों के गुरु के रुप में धर्मवंशी आचार्य का प्रतिष्ठापन किया हमारे आश्रित सत्संगी अपने आचार्य के साथ कभी भी विवाद न करें और अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्न-धन-वस्त्रादिक अपने आचार्य को भेंट करे।(शि.श्लो. ७१) श्री कृष्ण भगवान के जिस स्वरुप की आचार्य द्वारा प्रतिष्ठा की गई हो उसी स्वरुप की पूजा करना, इसके अलांवा दूसरे कृष्ण के स्वरुप को प्रणाम भले करें लेकिन उनकी पूजा नहीं करना। (शि.प.श्लो. ६२) इस शिक्षापत्री के श्लोको का नित्य पाठ करना, मनन, चिंतन करना।

आषाढ शुक्ल-१५ गुरुपूर्णिमा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री प्रातः परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती करके सभा में विराजमान हुये थे। मंदिर के ब्राह्मणों द्वारा स्वस्ति वाचन किया गया। संत तथा हरिभक्त समूहमें आरती उतारे थे। अनेक धामों से पधारे हुये पू. संतोने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पुष्पहार से पूजन-अर्चन किया था।

प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) तथा शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी ने धर्मवंशी आचार्य का महत्व समझाते हुये सभा का संचालित किया था। अमदावाद मंदिर के पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, पू. शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी, पू. रघुवीर स्वामी इत्यादि संतोने गुरुका माहात्म्य समझाया था। समस्त सत्संग के गुरु स्थान पर अपने आचार्य महाराजश्री हैं जो अपने भगवान स्वामिनारायणने स्वयं के स्थान परप्रतिष्ठित किया है।

अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने समस्त सभा को परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का एकमात्र आश्रित रहने की आज्ञा की थी। गुरुपूजन के यजमान बोल्टन के प.भ. कांतिलाल मावजीभाई खीमाणीने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था। गाँव-गाँव से तथा शहरों से हरिभक्त हजारों की संख्या में उपस्थित होकर अनुशासित ढंग से कतार बद्ध महाराजश्री के चरण का दर्शन किये थे। इस प्रसंग पर पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से रसोई में जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, भक्ति स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी इत्यादि संत मंडलने सुंदर आयोजन किया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा का कार्य किया था। (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में झूलेका दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरमें अषाढ कृष्ण-२ से परम कृपालु श्री नरनारायणदेव को अलौकिक पंच मेवा, फूल, चाकलेट से हिंडोले को सजाकर प्रतिदिन सायंकाल ठाकुरजी को उसी में झुलाया गया था। श्रद्धालु भक्तों ने यजमान पद का लाभ लेकर सेवा किये थे। पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में पू. ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, नटु स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, विश्वविहारी स्वामी, शा. नारायणमुनि स्वामी, इत्यादि संत मंडलने देव तथा धर्मकुल एवं हरिभक्तों को झूलेको सजाकर आयोजन करके खुश कर दिया था। (शा. मुनिदासजी)

भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १९ वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्री नरनारायण देव देश के ८ वें भावि गादी पति प.पू. लालजी महाराजश्री १८ वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गाय था।

प्रातः ८-१० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री कालुपुर मंदिर में पधारकर सर्व प्रथम परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे। मंदिर के विद्वानों द्वारा स्वस्तिवाचन किया गया।

बाद में बड़े संतो द्वारा, हरिभक्तों द्वारा, ट्रस्टियों द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारी गई थी।

विद्यार्थी संतो ने भाववाही शैली में प.पू. लालजी

महाराजश्री का १९ वाँ प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर धर्मकुल की निष्ठा के विषय में बताया था।

पू. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजीने धर्मकुल की निष्ठा के विषय में बताया । सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया । प.पू. लालजी महाराजश्री ने श्री नरनारायणदेव की निष्ठा में दृढता रखने पर बल देने को कहा।

ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, नटु स्वामी इत्यादि संत मंडलने सभी आयोजन व्यवस्थित किया था।

(चेतन जंगले)

श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल भाभर द्वारा श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह रात्रि पारायण धूमधाम से संपन्न हुआ

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से ता. २७-७-१६ से ता. ३१-७-१६ तक भाभर गाँव में देशी लोहाणा महाजन वाडी में श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रि पारायण के वक्तापद पर शा.स्वा. रामकृष्णदासजी थे । प्रथम दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर से महंत देव स्वामी, शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी, विश्वविहारी स्वामी, गांधीनगर के पी.पी. स्वामी, वीरडी गाँव से प.भ. कानाभाई कानाबार इत्यादि संत हरिभक्तोंने सुंदर लाभ लिया था। समस्त भाभर गाँव के हरिभक्तों ने चातुर्मास में कथा श्रवण का दिव्य लाभ लिया था। भाभर के अगल-बगल के गाँवो से हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर कथा श्रवण का लाभ लिये थे। इस प्रसंग पर भाभर गाँव का सत्संग मंडल श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल तथा स्वयं सेवक भाईयो एवं बहनोंने सुंदर सेवा करके श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त की थी।

(रमेशभाई नरभेराम कानाबार-भाभर)

सर्वोपरि छपैयधाम में ठाकुरजी का १६६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री घनश्याम महिला मंडल के यजमान पद पर सर्वोपरि छपैयाधाम में विराजमान सर्वावतारी श्रीबालस्वरुप घनश्याम महाराज का १६६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के उपलक्ष्य में पंचदिनात्मक श्री घनश्याम बालचरित्र की कथा शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर कथा का आयोजन किया गया था।

प्रथम दिन पोथीयात्रा नारायण सरोवर से निकल कर मंदिर में जन्म स्थान कथा स्थल तक धून-कीर्तन के साथ आयी थी। कथा में श्री घनश्याम प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर समूह महापूजा, नारायण सरोवर की समूह आरती, श्री रामप्रतापजी का भव्य विवाह, त्रिदिनात्मक हरियाग, यहाँ के ब्र. वासुदेवानंदजी के मार्गदर्शन में संपनन किया गया। इस प्रसंग पर महिला मंडल के आग्रह पर प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी तीन दिन तक महिला मंडल के साथ रुककर सभी बहनो को दर्शन का सुख दी थी।

निर्जला एकादशी के पाटोत्सव के शुभ दिन प्रातः ठाकुरजी का महाभिषेक षोडशोपचार विधिसे किया गया था । इस अलौकिक पाटोत्सव में अमदावाद, जेतलपुर, मूली, अयोध्या, दिल्ही, रतनपर इत्यादि धामों से संत पधारे थे। नारायणपुरा मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासीजने भी यहाँ पर रुक करके हरिभक्तों के लिये मार्गदर्शन का लाभ किये थे। जन्मोत्सव बांधकाम में सभी भक्तोंने उदारभाव से सेवा की थी।

महंत स्वामी वासुदेवानंदजी तथा उनके संत मंडलने सभी भक्तों की सुंदर व्यवस्था की थी। सर्वोपरि छपैयाधाम का अलौकिक पाटोत्सव का दर्शन करके यजमान महिला मंडल तथा सभी दर्शनार्थीयों का जीवन धन्य हो गया।

(चिराग भगत-छपैयाधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) १७ वां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) का १७ वाँ पाटोत्सव वैशाख कृष्ण-९ ता. ३०-५-१६ को धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः ८-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे, सर्व प्रथम मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार से धूमधाम के साथ अभिषेक किये थे। इसके बाद आयोजित सभा में संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि ''श्रीजी महाराज ने शहर के बीच में मंदिर का निर्माण करवाया था। हम पहले पोलो (गलियों) में रहते थे। समय वीतते हम लोग शहर से बाहर निकले बंगला-मकान

बड़े बने, बड़े-बड़े फार्म हाउस बनाये । भगवान का मंदिर वहीं का वहीं रह गया । अब भगवान का भी मंदिर बड़ा बनाये, भगवान हम सभी की मनोकामना पूर्ण केरं ऐसी परमकृपालु श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना । यहाँ भी हम आपलोगों के साथ है, पडोसी हैं तथा अक्षरधाम में भी साथ रहेंगे । पाटोत्सव के यजमान पद पर प.भ. जयेन्द्रभाई शांतिलाल ठक्कर परिवारने लाभ लिया था । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की अन्नकूटी की आरती उतारी थी । इस मंदिर के निर्माण से लेकर आज तक ठाकुरजीकी सेवा पूजा करने वाले देव-धर्मकुल के निष्ठावान प.भ. गंगारामभाई के सेवा की प्रशंसा की गई थी ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - मेमनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज का ५६ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज (भाइयों तथा बहनोंके) ५६ वाँ पाटोत्सव ता. ११-४-१६ को धूमधाम से मनाया गया था ।

पाटोत्व के उपलक्ष्य में ता. ५-४-१६ से ता. ११-४-१६ तक स.गु. शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी (नाथद्वारा) के वक्ता पद पर अ.नि. बिपीनचंद्र ओच्छवलाल शाह परिवार के यजमान पद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा सम्पन्न हुई थी ।

कथा के अवसर पर अनेक धामो से संत पधारे थे जिस में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, गांधीनगर के महंत छोटे पी.पी. स्वामी, श्रीजीप्रकाश स्वामी, माधव स्वामी तथा नाथद्वारा मंदिर के महंत स्वामी पधारे थे ।

ता. १०-४-१६ को प्रातः काल प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे तथा यजमान परिवार ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करके आरती उतारी थी । समस्त सभा को पू. लालजी महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । ता. ११-४-१६ को श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक शास्त्री श्री भरतभाईने किया था । (शंभुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिजका का १२९ वाँ पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से, मंदिर के मंहत स्वामी प्राणजीवनदासजीकी प्रेरणा से प्रांतिज मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का १२९ वाँ पाटोत्सव सभी मिलकर धूमधाम से संपन्न किये । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. ५-४-१६ से ता. ६-६-१६ तक त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत दशम स्कंन्धरात्रि कथा सा.स्वा. गोपालजीवनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी । सभा संचालन हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामीने किया था । अनेक धामों से संत पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे ।

ठाकुरजी की अन्नकूट आरती पू. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) ने उतारी थी । गाँव के सभी अग्रगण्य हरिभक्त संतो के साथ मिलकर सहयोग किया था तथा दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया था ।

ता. २०-६-१६ को प.भ. विनोदकुमार रमणलाल पटेल के यजमान पद पर श्रीहरिकृष्ण महाराज को केशर से स्नान वेदोक्त विधिसे पुजारी संतोने करवाया था ।

(को. हरिभाई मोदी)

लुणावाडा में महिला पंचान्ह पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा सांख्ययोगी बचीबा की प्रेरणा से लूणावाडा में ता. २२-५-१६ से २६-५-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण अ.सौ. का. जयाबहन कल्पेशभाई के यजमान पद पर सां.यो. नर्मदाबा (जेतलपुर) ने अपनी अमृतवाणी में कथामृत का पान कराया था । कथा में आनेवाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाया गया था । ता. २६-५-१६ को पूर्णाहुति के अवसर पर अहमदाबाद से असह्य गर्मी होते हुये भी प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । कथा के पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रसन्न हुई थी । इस प्रसंग पर लुणावाला महिला मंडल तथा सुवासिनी मंडलने प्रेरणात्मक सेवा की थी ।

(महिला मंडल प्रमुखश्री - लुणावाडा)

लालोडा गाँव में ठाकुरजी की भव्य नगरयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के पू. स.गु.शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी की प्रेरणा से लालोडा धाम में वैशाख शुक्ल-३ को हजारो हरिभक्तों के विशाल समुदाय के साथ श्रीहरिकृष्ण महाराज की नगरयात्रा प्रतिवर्ष की तरह समग्र गाँव में धूमधाम के साथ निकली थी । यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में रथयात्रा के दिन ठाकुरजी को रथ में बैठाकर उत्सव की आरती की गई थी । प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से गाँव में वृक्षारोपण, ग्राम स्वच्छता अभियान, व्यसन मुक्ति इत्यादि सुंदर कार्य श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बाल मंडल द्वारा किये गये थे । समग्र कार्यक्रम में पू. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा बालकृष्ण स्वामी प्रेरक थे । (भूमित पटेल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी केशर स्नान दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (उनाला रोड) में ता. १९-६-१६ को ठाकुरजी के केशर स्नान में मोरबी, मच्छुकांठा, हालार, हलवद विस्तार में बहुत सारे हरिभक्त दर्शन का अलौकिक लाभ लिये थे।

अभिषेक के बाद श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि तथा कथा में स.गु. महंत स्वामी भक्तिनंदनदासजी तथा स.गु. मंहत स्वामी विश्वविहारीदासजीने सर्वोपरि श्रीजी महाराज का दिव्य लीला चरित्र हरिभक्तों को सुनाया था। आगन्तुक दर्शनार्थियों को भोजन की सुंदर व्यवस्था की गई थी।

इस प्रसंग के यजमान लक्ष्मी कटींगवाला प.भ. राजुभाई प.भ. रवजीभाई खीमजीभाई भगत परिवार ने सुंदर लाभ लिया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने प्रेरणात्मक सेवा की थी। (रमेशभाई कोठारी - मोरबी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी सरदारबाग - आगामी दशाब्दी महोत्सव के उलक्ष्य में विविधकार्यक्रम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली विस्तार के श्री नरनारायणदेव विभागीय शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (सरदारबाग) में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अधोनिर्दिष्ट कार्यक्रम ता. ११-२-१७ से १७-२-१७ तक होंगे।

महामंत्र धुन जपयज्ञ, गाँव गाँव में सत्संग सभा, वचनामृत, भक्तचिंतामणी, जनमंगल पाठ, शिक्षापत्री ग्रंथ का पाठ, दंडवत प्रदक्षिणा, इत्यादि नियम तथा जिस गाँव में सत्संग नहीं है उस गाँव में संतो द्वारा तथा युक मंडल द्वारा सत्संग सभा, व्यसन मुक्ति अभियान, वृक्षारोपण जैसी अनेक प्रवृत्ति की जायेगी । इस उत्सव मुक्ति अभियान, वृक्षारोपण जैसी अनेक प्रवृत्ति की जायेगी। इस उत्सव की सेवा में सहयोगी संत पू. शा.स्वामी भक्तिहरिदासजी, शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, को. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, श्रीजी स्वरूप स्वामी, घनश्यामचरण स्वामी इत्यादि संत है।

(महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी)

मोरबी मंदिर के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर माथक (ता. हलवद) अखंड धून सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धमकुल के आशीर्वाद से एवं मोरबी मंदिर के महंत स्वामी शा. भक्तिनंदनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारा?ण मंदिर मोरबी (सरदार बाग-शिखरी मंदिर) के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रथम चरण के रुप में माथक (ता. हलवद) श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद में ता. २३-७-१६ को १२ धन्टे की अखंड धुन सायंकाल ६ बजे से ८-०० बजे तक सत्संग सभा हुई थी । यहाँ पर सत्संगियों की संख्या सीमित है। फिर भी श्रीमुकेशभाई, नारणभाई मिस्त्री इत्यादि भक्तों के सुंदर प्रयास से छोटे बच्चे भी बड़े लोगो के साथ मिलकर (धुन में भाग लिये थे।)

इस प्रसंग पर मोरबी से महंत शा.स्वामी भक्तिनंदनदासजी, शा. विश्वविहारीदासजी श्रीजीस्वरुप स्वामी, शा.स्वा. धर्मपल्लभदासजी इत्यादि संतोने सुदंर कथा वार्ता की थी । गाँव के प.भ. नारणभाई मिस्त्री का देव-आचार्यश्री में खूब निष्ठा है। सत्संग के लिये खूब सक्रिय रहते हैं। जिन्होंने इस प्रसंग पर ८०० जितने बालकों को भोजन कराया था। मोरबी के संत यदाकदा यहाँ पर सत्संग का लाभ देते हैं।

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांघधा १५२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा में विराजमान सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का १५२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस मंदिर में बिराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा अपने आदि आचार्य प.पू.ध.धु. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों हुई थी। यहाँ पर वर्णिवेश में प्रभु पधारकर विश्राम किये थे। इस प्रसंग पर मूली के पू. शा.स्वा. भक्तिविहारीदासजी स्वामीने संत मंडल के साथ पधारकर कथा वार्ता का लाभ दिया था। यहाँ मंदिर में सेवा पूजा करने वाले स्वामी सर्वजीव हितावहदासजी सत्संग प्रवृत्ति सुंदर करते हैं। मंदिर के कोठारीश्री हरिभाई तथा हरिकृष्ण सत्संग मंडल ने प्रेरणात्मक सेवा की थी।

(प्रति. अनिलभाई दुधरेजिया - धांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद तथा मंहत नारायणदासजी की

प्रेरणा से जुलाई महिने में, मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष रथयात्रा उत्सव तथा आम्ररसोत्सव मनाया गया । रथ में श्रीकृष्ण महाराज के साथ, संत यजमानोने पूजन किया था। सभी सत्संगी भाईबहनोंने मंदि में रथ को खींच कर रास-गरबा किया था। आम्ररसोत्सव में आम से जाये झुले में श्रीहरि को रखा गया था। इस अवसर पर स्वामीने सुंदर कथा सुनाई थी । हरिभक्तो ने धून तथा कथा श्रवण किया, और हनुमान चालीसा का पाठ कर समूह प्रसाद का आयोजन किया था। (बलदेवभाई पटेल)

छपैयाधाम पारसीपनी (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) श्रीमद् भागवत ज्ञानयज्ञ

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर छैपायधाम पारसीपनी में १० जुलाई से १६ जुलाई पर्यंत शायं ५-०० से ८-०० बजे तक, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री एवं पू. बिंदुराजा की शुभ उपस्थिति में हजारो हरिभक्तोने श्रीमद् भागवत कथा अमृत का पान किया था। वक्तापद पर श्री वृंदावनविहारी बांकेविहारी परिवार के गोस्वामी श्री मुकुलकिशन शास्त्री थे। इस अवसर पर पोथीयात्रा धून-कीर्तन के साथ सुदंर सजाये रथ में नीकली थी। कथा में आनेवाले समग्र प्रसंग धामधूम से मनाये गये थे । पधारे महानुभाव तथा सेवाभावि युवानो का यथोचित सम्मान किया गया था। सभी बहनो ने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. बिंदुराजा का पुष्पहार से पूजन अर्चन किया था। प.पू. बड़े गादीवालाने सभी को आशीर्वाद दिये थे। यहाँ के मंहत शा.स्वा. सत्यस्वरुपदासजी तथा हरिभक्तोने सुंदर आयोजन किया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड का आठवाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में कलिवलेन्ड मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया । इस अवसर पर अहमदाबाद से श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, ह्युस्टन सानहोजे और कोलोनीया मंदिर के महंत तथा हजारो की संख्या में हरिभक्त उपस्थित रहे थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से कलिवलेन्ड मंदिर में बिराजमान श्रीहरि का महाअभिषेक हुआ था। जिस के पश्चात अन्नकुल हुआ था। ह्युस्टन मंदिर के शा. निलकंठ स्वामीने श्री हनुमानजी महाराज की सुंदर कथा अमृत का पान करवाया था। मारुति यज्ञमें यजमान परिवार ने आरती का लाभ लिया था। श्री राकेशभाई पटेलने आगे के कार्यक्रम की घोषणा की थी। पधारे महेमान तथा यजमान एवं सेवा करने वाले हरिभक्तों को प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद प्रदान किया था। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) में पू. लालजी महाराजश्री की पधरामणी

अपने कोलोनिया स्वामिनारायण मंदिर में लंबे सप्ताहात के दौरान शनिवार शाम को श्री नरनारायणदेव गादी के भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपदागीवालाश्री, पू. श्री राजाकी शुभ उपस्थिति में यहाँ के महंत शा.स्वा. धर्मकिशोरदास के मार्गदर्शन से सुंदर सत्संग सभाका आयोजन हुआ था।

स्वामीने कहा कि सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान सभी के मनोरथ पूरे करते हैं। आज अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री एवं समस्त बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और पू. श्रीराजा का शुभ आगमन अपने मंदिर में हुआ। यह अपना भाग् यहै कि हमे हमारे गुरु के दर्शन का लाभ मिला।

युवान भक्तोने प.पू. लालजी महाराजश्री का एवं समस्त बहनोने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री एवं पू.श्रीराजा का फुलहार से स्वागत कर, आरती-पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

उपस्थित महेमान, महानुभाव, यजमान एवं सेवा करने वाले भक्तो के पूजन के बाद लालजी महाराजश्रीने सन्मान किया था। एवं समस्त भक्तो को आशीर्वाद दिया था।

(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन अमेरिका (आई.एस.एस.ओ.) १६ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी, स्वामी हरिनंदनदासजी, शिकागो मंदिर के शांतिप्रकाश स्वामी एवं डिट्रोईट मंदिर के माधव स्वामी और अमेरिका इसो चेप्टर के अनेक हरिभक्तो की उपस्थिति में १२ जून से १८ जून पर्यन्त ह्युस्टन, सुगरलेन्ड मंदिर का पाटोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर हरिनंदन स्वामीने संगीत के साथ

श्रीमद् भागवत कथा का रसपान करवाया था। कथा में आने वाले प्रत्येक प्रसंग को उसको यजमान की उपस्थिति में धामधूम से मनाया गया।

दि. १८ जून शनिवार को ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया। जिस का दर्शन कर हजारो हरिभक्त धन्य हो गये। प्रसंगिक सभा में डिट्रोईट एवं शिकागो के महंत स्वामीने भगवान की सर्वोपरिता तथा धर्मकुल की महिमा की बात कही थी। पश्चात यजमान परिवार महेमान तथा सेवा करने वालो का सन्मान किया गया। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा (ज्यॉर्जिया) (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) पंचम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से आटलान्टा मंदिर के महंत स्वामी मुक्तस्वरुपदासजी की प्रेरणा से एवं मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा का ५ वाँ पाटोत्सव १२ जुलाई २०१६ से १६ जुलाई तक समग्र धर्कुल की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया।

महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (शिकागो) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी।

उत्सव के समय समूह महापूजा, पोथीयात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नंद संतो द्वारा विरचित कव्वाली, मेडिकल केम्प, इत्यादि सुंदर कार्यक्रम करेक धर्मवंशी परिवार को खुश किया गया था।

एटलान्टा मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का पंचम पाटोत्सव अभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से वेदोक्त विधिसे षोडशोपचार पूर्वक संपन्न किया गया था। जिसका अलौकिक दर्शन करके यहाँ के हजारों हरिभक्त धन्य-धन्य हो गये थे। प.भ. किशोरभाई पटेल, प.भ. सुरेशभाई पटेल, प.भ. नवीनभाई पटेल इत्यादि हरिभक्तोंने अन्नकूट आरती तथा श्रृंगार आरती का यजमान बनकर धर्मकुल के साथ आरती का महाअलौकिक लाभ लिया था।

इस तरह यहाँ पर मंदिर का पंचम पाटोत्सव खूब धूमधाम से मनाया गया। हरिभक्तोंने देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन करके जीवन को कृतार्थ किया था।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु पूजन के यजमान प.भ. राजुभाई पटेल (डांगरवावाला) परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। इसके साथ ही यजमानो को तथा अन्य भक्तों को भी पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद दिया गाय था। भक्ति स्वामीने सुंदर सभा का संचालन किया था।

प्रासंगिक सभा में जेतलपुर मंदिर के पू. पी.पी. स्वामीने अपने संप्रदाय के गुरु पद पर दोनो देश के आचार्य महाराजश्री के गुरुपरंपरा को वेद शास्त्रानुसार बड़े सरल ढंग से समझाया था।

अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने आर्शीवचन में कहा कि श्रीजी महाराजने स्वयं संप्रदाय के गुरुपद पर दोनो देश की स्वयं की गादी पर आचार्य (धर्मकुल वंश में से) पूर्व से प्रेषित किया है। श्रीजी महाराज ने ही संप्रदाय के सभी कार्य को करने का उत्तर दायित्व आचार्यो को दिया है, जिसे वे पूराकर रहे हैं। इस तरह का आशीर्वाद दिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने आर्शीवचन में कहा कि हरिभक्त एक साथ मिलकर मंदिर का कार्य, सत्संग का विकास हो ऐसी प्रवृत्ति करते हैं। सभी हरिभक्तों की सेवा की खूब प्रसंशा किये थे। इसके साथ ही मंदिर में बिराजमान देव की आज्ञा-वचन का जोपालन करेगा, देव दर्शन करेगा तो निश्चित ही आप सभी की मनोकामना श्रीजी महाराज पूरा करेंगे। इसेक साथ यहाँ के सत्संग की उत्तरोत्तर प्रगति हो, उन्नति हो, तथा श्रीहरि सभी को सुखिया करें, सभी की निष्ठा में वृध्दि हो ऐसा सभी को आशीर्वाद दिये थे।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजीने बहनो की अलग सभा में बहनो को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

अन्त में प्रेसिडेन्ड श्री दक्षेश पटेल ने तन, मन, धन से सेवा करने वाले यजमानो की स्वयंसेवको की महिल मंडल की प्रसंशा करके आभार व्यक्त किया था। (रजनी पटेल तथा एटलान्टा सत्संग समाज)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १९ वाँ प्रागट्योत्सव

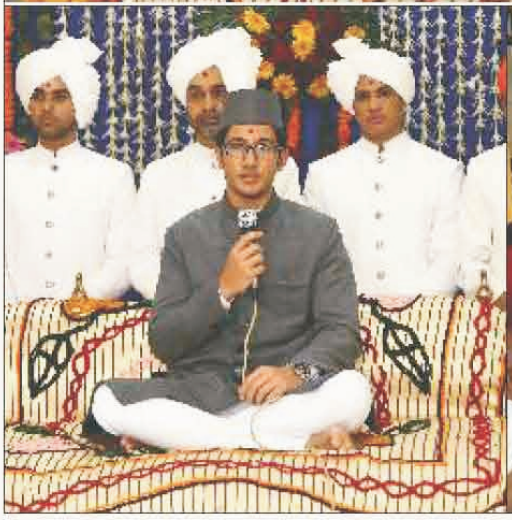

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

स्वयं के १९ वें प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव की आरती उतारते हुये प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-आरती करते हुये संत-हरिभक्त ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं धर्मकुल की उपस्थिति में
मुली श्री राधाकृष्णदेव के छत्रछाया का श्री नरनारायणदेव देशान्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (सरदारबाग)

दशाब्दी महोत्सव

ता. ११-२-१७ से १७-२-१७ तक

धूमधाम से संपन्न किया जायेगा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवं आशीर्वचन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल गांधीनगर (से-२) आयोजित, अमदावाद श्री नरनारायणदेव का श्री स्वामिनारायण मंदिर-गांधीनगर (से-२) के आंगन में

भव्य झूले का दर्शन एवं हिमालय दर्शन

प्रारंभ : ता. ३१-७-१६ अषाढ कृष्ण-१२ रविवार पूर्णाहुति : ता. २८-८-१६ श्रावण कृष्ण-११ रविवार

दर्शन का समय

सोम से शनि - दोपहर - ४-०० से रात्रि ८-३०

अवकाश तथा एकादशी पूनम का दिन प्रात : ८-३० बजे से ११-३० दोपहर ४-०० से रात्रि ८-३०